तापमान
अधिकतम 16.0 डिग्री
न्यूनतम 4.0 डिग्री

हरिभूमि
हिसार भूमि
रोहतक, रविवार 11 जनवरी 2026

12 एलुमनी मीट में पूर्व छात्रों ने खोला यादों का पिटारा

12 मूल्य संवर्धित दुग्ध उत्पाद किसानों की आय बढ़ाने में निभा सकते महत्वपूर्ण भूमिका

खबर संक्षेप

गोपुत्र सेना का अग्रोहा में रक्तदान शिविर कल

हिसार। राष्ट्रीय युवा दिवस पर 12 जनवरी को गौपुत्र सेना की ओर से अग्रोहा स्थित ओ म लाइब्रेरी में रक्तदान शिविर आयोजित किया जाएगा। गौपुत्र सुनील क्रांतिकारी ने बताया कि इसका उद्देश्य युवाओं को मानवीय सेवा से जोड़ना और समाज के प्रति उनकी जिम्मेदारी का बोध कराना है। प्रस्तावित रक्तदान शिविर के माध्यम से युवाओं में सेवा भावना, संवेदनशीलता और सामाजिक सहभागिता को प्रोत्साहित किया जाएगा। यह आयोजन न सिर्फ जरूरतमंदों के लिए जीवनरक्षक सिद्ध होगा, बल्कि युवाओं को सकारात्मक दिशा में अपनी ऊर्जा लगाने का अवसर भी प्रदान करेगा।

अन्नपूर्णा भूख के जंग तहत बांटा भोजन

हांसी। लायन्स क्लब हांसी द्वारा इन्टरनेशनल सर्विस सप्ताह अन्नपूर्णा भूख के खिलाफ जंग के अन्तर्गत 3 से 11 जनवरी तक डिस्ट्रिक्ट प्रोजेक्ट लगाया गया, जिसमें भूखे व जरुरतमंद लोगों को भोजन, फल व मिठाई खिलाई व वितरित की गई। कार्यक्रम के दौरान शनिवार को अन्न क्षेत्र रोटी बैंक में सेवा की गई तथा रविवार को श्री राम सिंगोदिया वेलफेयर सोसायटी रोटी सेवा समिति आमटी तालाब के नजदीक रोटी व मिठाई की सेवा की जाएगी।

दिव्यांग केंद्र में नेत्र ऑपरेशन शिविर 17 को

हिसार। दक्षिण हरियाणा बिजली वितरण निगम (डीएचबीवीएन) 17 जनवरी को दिव्यांग पुनर्वास केंद्र में दूसरे चरण का निशुल्क नेत्र ऑपरेशन शिविर आयोजित करेगा। कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के तहत लगने वाले इस शिविर में जरूरतमंद मरीजों की निशुल्क नेत्र जांच करके उनकी आंखों के सफेद मोतियाबिंद का ऑपरेशन दिव्यांग केंद्र के आधुनिक ऑपरेशन थियेटर में किया जाएगा।

पॉलीटेक्निक संस्थान के 13 छात्रों को मिली नौकरी

हिसार। गुरु दक्ष राजकीय बहुतकनीकी संस्थान में सत्र 2023–26 के विद्यार्थियों के लिए कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन डॉ. मुकेश बंसल के नेतृत्व में किया गया। इस ड्राइव में एनरिच एग्रो फूड प्रोडक्ट्स प्रा. लि. (कोका-कोला), आईएमटी रोहतक ने भाग लिया। मीडिया कॉर्डिनेटर सुनील भुटानी ने बताया कि इस कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव में कुल 13 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इनमें से इंस्ट्रूमेंटेशन एंड कंट्रोल इंजीनियरिंग शाखा से 8 विद्यार्थी, मैकेनिकल इंजीनियरिंग से 3 विद्यार्थी तथा इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग से 2 विद्यार्थियों का चयन हुआ। चयनित विद्यार्थियों को 2.40 लाख रुपये वार्षिक पैकेज प्रदान किया गया। साक्षात्कार प्रक्रिया संस्थान के टीपीओ सेल में आयोजित की गई।

हांसी में शीघ्र स्थापित होगी सेशन डिवीजन: सीजेआई

आज का दिन मेरे लिए एतेहासिक, नारनौंद में कोर्ट की स्थापना हुई : सीजेआई सूर्यकांत

नारनौंद । कोर्ट का शुभारंभ करते हुए चीफ जस्टिस सूर्यकांत व अन्य। व बार एसोसिएशन के प्रधान ज्ञान प्रकाश लोहान चीफ जस्टिस की राम परिवार की प्रतिमा भेंट करते हुए।

न्याय के लिए स्थापित की जा रही अदालतें

हरिभूमि न्यूज ⏭ बरवाला

भारत के मुख्य न्यायधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने कहा है कि सभी व्यक्तियों को जल्द न्याय मिले, इसके लिए उनके नजदीक अदालतें स्थापित की जा रही है। अदालतें जितनी नजदीक होगी उतना ही व्यक्ति अपने अधिकारों की रक्षा के लिए न्याय की लड़ाई लड़ सकता है।

मुख्य न्यायधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत शनिवार को बरवाला में बनी अदालत का शुभारंभ करने व उसके साथ ही बनने वाले नए कोर्ट कॉम्पलेक्स की आधारशिला रखने उपरांत कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए पौधरोपण भी किया। न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने कहा कि नई अदालतों की स्थापना का मूल उद्देश्य एक्सेस टू जस्टिस यानि आम नागरिक तक न्याय को सरल, सुलभ और सस्ता बनाना है। उन्होंने हरियाणा सरकार को बधाई देते हुए कहा कि बरवाला और नारनौंद में सोमवार से न्यायिक कार्य प्रारंभ हो जाएगा। उन्होंने कहा कि संविधान निर्माताओं ने प्रत्येक राज्य में हाईकोर्ट की व्यवस्था इसी सोच के साथ की थी कि नागरिकों को अपने मौलिक, नागरिक व मानवाधिकारों के लिए दिल्ली तक न जाना पड़े, बल्कि वे अपने ही राज्य में न्याय प्राप्त कर सकें।

सीजेआई ने जताया राज्य सरकार का आभार

न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने हरियाणा सरकार का आभार जताते हुए कहा कि राज्य सरकार ने न्यायिक अवसंरचना के विकास में सदैव सहयोग किया है। उन्होंने बताया कि अपने कार्यकाल के दौरान वे हाईकोर्ट की बिल्डिंग कमेटी के चेयरमैन भी रहे और हरियाणा में कई न्यायिक परिसरों के निर्माण में सरकार से समय पर आर्थिक सहायता मिली। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के मार्गदर्शन में न्यायिक अधिकारी आम आदमी के कष्टों को समझते हुए न्याय प्रदान करेंगे और गुणवत्ता पूर्ण न्याय देने में प्रदेश देश में अग्रणी बनेगा।

न्याय आपके द्वार की अवधारणा पर चलते हुए आमजन के पास न्यायिक परिसरों का निर्माण किया जा रहा है जोकि गरीब व्यक्तियों के लिए न्याय प्राप्त करने में काफी कारगर साबित हो रहे है। जहां निरंतर आधारभूत संरचना का विकास हो रहा है वहीं आमजन को गुणवत्तापूर्वक न्याय भी मिलना चाहिए। कैबिनेट मंत्री गंगवा ने किया स्वागत कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा ने मुख्य न्यायधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत का अपनी पैतृक धरती पर आगमन पर स्वागत करते हुए कहा कि आज का दिन हिसार जिला के लिए गौरव का दिन है। अपनी न्यायिक सुझबूझ से न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने हरियाणा के साथ-साथ देश का मान बढ़ाया है। आज वे न्यायिक प्रक्रिया में सर्वोच शिखर पर पंहुचे है जोकि युवाओं के लिए प्रेरणादायक है।

ये रहे उपस्थित

कार्यक्रम में बार प्रधान दिनेश सैनी ने मुख्य न्यायधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत को स्मृतिचिन्ह भेंट किया। कार्यक्रम में कैबिनेट मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा, पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट के न्यायधीश न्यायमूर्ति शील नागू, पंजाब हरियाणा उच्च न्यायालय की न्यायाधीश अलका सरीन, न्यायाधीश एचएस सेठी, जिला एवं सत्र न्यायाधीश अलका मलिक, अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश ईशा खत्री व सौरव खत्री, एसीजेएम अनुराधा, विधायक रणधीर पनिहार, उपायुक्त महेन्द्र पाल, एसपी शंशाक कुमार सावन, पूर्व सांसद डीपी वत्स, पूर्व मंत्री अनूप धानक, एसडीएम डॉ. वेदप्रकाश, एडवोकेट मनोज, एडवोकेट नवदीप चहल सहित अन्य अधिवक्तागण मौजूद रहे।

न्यायिक परिसर पर 21 करोड़ से अधिक की धनराशि होगी खर्च

नारनौंद के उपमंडलीय न्यायिक परिसर पर 21 करोड़ से अधिक की धनराशि खर्च की जाएगी। इस न्यायिक न्यायालय परिसर का निर्माण 7255.30 वर्ग मीटर अथवा 1.79 एकड़ में किया जाएगा। न्यायिक न्यायालय परिसर में भू-तल, प्रथम तल तथा द्वितीय तल पर विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाएंगी। भू-तल पर न्यायालय कक्ष, साक्षी कक्ष व अन्य कक्ष, प्रथम तल पर फैमिली कोर्ट, मध्यस्था कक्ष आदि तथा द्वितीय तल पर ममटी एवं मशीन रूम का निर्माण होगा। नारनौंद बार एसोसिएशन की ओर से मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत, पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश शील नागू व प्रदेश के जनस्वास्थ्य मंत्री रणबीर गंगवा को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल, पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के न्यायाधीश हरसिमरन सिंह सेठी, हिसार डिवीजन की प्रशासनिक न्यायाधीश अलका सरीन, हिसार की जिला एवं सत्र न्यायाधीश अलका मलिक, सहकारिता मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा, विधायक रामकुमार गौतम, विधायक जस्सी पेटवाड़, पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के रजिस्ट्रार जरनल चंद्रशेखर, जिला उपायुक्त राहुल नरवाल, पुलिस अधीक्षक अमित यशवर्धन, एसडीएम विकास यादव, अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश गगनदीप मित्तल, सीजेएम अशोक कुमार, बार एसोसिएशन के अध्यक्ष ज्ञान प्रकाश लोहान, उपाध्यक्ष सुशील शर्मा, सचिव सुनील पनिहार, संयुक्त सचिव जितेंद्र खरब व अमन ढांडा आदि मौजूद रहे।

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौंद

देश के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने कहा है कि हांसी में शीघ्र ही सेशन डिवीजन स्थापित की जाएगी। हांसी को प्रदेश का 23वां जिला बनाने के बाद यहां हांसी वासियों के लिए एक और सुविधा होगी। आमजन को न्याय पहुंचाने की दिशा में यह डिवीजन महत्वपूर्ण साबित होगी। न्यायमूर्ति सूर्यकांत नारनौंद स्थित उपमंडल न्यायिक परिसर में नारनौंद उपमंडल न्यायालय के शुभारंभ तथा उपमंडल न्यायिक परिसर के शिलान्यास के उपरांत उपस्थित न्यायिक अधिकारियों, अधिवक्ताओं तथा गणमान्य नागरिकों को संबोधित कर रहे थे। सूर्यकांत बोले कि नारनौंद में उपमंडलीय न्यायालय की स्थापना होना हर्ष का विषय है। संविधान में सभी को एक समान रूप से न्याय प्राप्त करने का अधिकार दिया है। न्यायपालिका द्वारा गरीब लोगों तक सुलभ न्याय देने के लिए कार्य किया जा रहा है। न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने न्यायिक अधिकारियों एवं अधिवक्ताओं को आह्वान करते हुए कहा कि न्याय के प्रति आस्था को और अधिक मजबूत रखते हुए समय पर न्याय पहुंचाना सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। अधिवक्ता न्याय के सजग प्रहरी के तौर पर कार्य करते हुए बार के एथिक्स को याद रखें। विकास के साथ तकनीकी युग में अधिवक्ता स्वयं को तकनीकी ज्ञान से युक्त करें तथा न्यायपालिका में हो रहे विकास से स्वयं का अपडेट रखें। उन्होंने कहा कि न्यायिक अधिकारी व अधिवक्ता सकारात्मक सोच के साथ लंबित मामलों को निपटाएं।

नारनौंद । गांव के होनहार छात्रों को सम्मानित करते हुए चीफ जस्टिस सूर्यकांत।

न्यायमूर्ति का जीवन प्रेरणा स्त्रोत

केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत का स्वागत करते हुए कहा कि सीजेआई सूर्यकांत से कई बार वार्तालाप हुआ है। उनकी बातों में गांव की खुशबू महसूस होती है। उन्होंने बच्चों का आह्वान करते हुए कहा कि न्यायमूर्ति सूर्यकांत का जीवन प्रेरणा का स्त्रोत है, इसलिए बच्चे इनके जीवन से प्रेरणा लेकर आगे बढ़े और मुकाम हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत करें।

मॉडल संस्कृति स्कूल बनाने की घोषणा

शिक्षा मंत्री महिपाल ढांडा ने सीजेआई सूर्यकांत तथा अन्य अतिथियों को स्वागत किया। उन्होंने गांव के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय को मॉडल संस्कृति स्कूल बनाने की घोषणा की। इस दौरान मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने मेधावी बच्चों को सम्मानित भी किया। इससे पूर्व सीजेआई सूर्यकांत ने गांव स्थित मंदिर में जाकर माथा टेका।

मांगें होंगी पूरी

इस दौरान गांव के विकास को लेकर बस स्टेंड के पास एक एकड़ जमीन पर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का निर्माण, नए राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के पुराने भवन को कंडम करवाकर नया भवन बनवाने, डोबा वाले तालाब के पीछे हर्बल पार्क बनवाने, ई-पुस्तकालय स्थापित करवाने, डोबा तथा डोबी तालाब का सौंदर्यकरण करवाने, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में सौलर पैनल लगवाने सहित कई मांगे रखी गई, जिन पर मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने कहा कि कल मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी से मुलाकात हुई थी।

आज का दिन इतिहास के पन्नों में दर्ज: सत्यपाल सिंधु

हरियाणा बॉक्सिंग संघ के अध्यक्ष मेजर सत्यपाल सिंधु ने कहा कि आज का दिन इतिहास के पन्ने पर दर्ज हो गया है कि नारनौंद में कोर्ट शुरू हो गई है। ये लोगों की लंबे समय से मांग थी। चीफ जस्टिस सूर्यकांत ने मांग को पूरा करके बड़ी सौगात दी है।

बच्चों ने ली सेल्फियां

सम्मान समारोह के दौरान बच्चों ने अपने हाथों से बनाई मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत की पेंटिंग को भीड़ के बीच से अपने हाथों में उठाकर दिखाया। सीजेआई सूर्यकांत की नजर जैसे ही बच्चों पर पड़ी तो उन्होंने हाथ हिलाकर बच्चों को मंच पर बुलाया और दुलार करते हुए सम्मानित किया। बच्चों ने मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत के साथ सेल्फियां भी ली। कार्यक्रम के दौरान सीजेआई सूर्यकांत की धर्मपत्नी सविता वशिष्ठ को भी गांव की ओर से सम्मानित किया गया। गायक लोकेश शर्मा ने सीजेआई सूर्यकांत के सम्मान में उनके जीवन पर आधारित गीत प्रस्तुत किया।

मनरेगा का नाम बदलने पर जेपी ने भाजपा पर साधा निशाना

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

हिसार के सांसद जयप्रकाश ने कहा है कि मनरेगा का नाम बदलना महात्मा गांधी के सिद्धांतों, महात्मा गांधी की आत्मा व उनके संघर्ष को मिटाने व खत्म करने का प्रयास है। भाजपा द्वारा विकसित भारत रोजगार जी राम जी नाम जो बिल लोकसभा में पेश किया गया है, हम उसके खिलाफ है लेकिन हम श्री राम जी के खिलाफ नहीं है। सांसद जयप्रकाश शनिवार को लोक निर्माण विश्राम गृह में पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि जो योजनाएं पंडित जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी व राजीव गांधी के नाम से थी उसका सिर्फ

हिसार। पत्रकारों से बातचीत करते सांसद जयप्रकाश।

नाम बदला है काम वही है। इनके पास कोई योजना नहीं है जो नई चला सकें। गरीबों के लिए कोई नई योजना लाते तो हम उसका विरोध नहीं करते। यह तो मनरेगा खत्म करने का षड्यंत्र है। वर्ष 2005 में मनरेगा बिल लागू हुआ, यह सोनिया गांधी की सोच थी और प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने लागू करके गांव के गरीब, मजदूर व जरूरतमंद को लाभ पहुंचाने का प्रयास किया लेकिन अब केन्द्र इसे बंद करने का प्रयास कर रहा है। कांग्रेस सरकार जब यह बिल लेकर आई, उस समय 100 प्रतिशत लेबर का खर्चा व 90 प्रतिशत मटेरियल भी केंद्र सरकार द्वारा दिया जाता था और प्रदेश सरकार को तो सिर्फ 10 प्रतिशत देना होता था। अब इन्होंने 10 प्रतिशत की बजाय 40 प्रतिशत राज्य सरकार का कर दिया। प्रदेश सीनियर प्रवक्ता व हिसार जिला शहरी प्रधान बजरंग गर्ग ने बताया कि 11 जनवरी को सुबह गांधी चौक पर कांग्रेस पार्टी की ओर से उपवास रखा जाएगा।

एसयूसीआई ने फूंका ट्रंप का पुतला

हरिभूमि न्यूज ⏭ हांसी

अमेरिकी साम्राज्यवादियों द्वारा वेनजुएला पर किए गए सैन्य हमले के विरोध में शनिवार को एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) पार्टी ने अपने कार्यालय से बाजार में प्रदर्शन किया और अम्बेडकर चौक पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प का पुतला दहन कर वेनेजुएला पर की गई सैन्य कार्रवाई की कड़ी निन्दा करते हुए राष्ट्रपति मादुरो व उन की पत्नी को तुरंत रिहा करने की मांग की। प्रदर्शनकारियों ने अमेरिकन साम्राज्यवादियों के वेनजुएला व लेटिन अमेरिका से तुरंत पीछे हटने की मांग की। प्रदर्शनकारियों को संबोधित करते हुए एसयूसीआई कम्युनिस्ट के राज्य सचिव मंडल सदस्य व जिला सचिव मेहर सिंह बांगड़ ने कहा कि युद्ध पिपासु अमेरिकी साम्राज्यवाद द्वारा वेनजुएला पर किया गया हमला बेहद घृणित व निंदनीय है। प्रदर्शन को एआईयूटीयूसी के जिला प्रधान सत्यनारायण भाटोल व वंदना ठाकुर ने भी संबोधित किया।

हांसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का पुतला दहन करते कम्युनिस्ट पार्टी के नेता।

हरियाणा की बेटियों ने जीता कांस्य पदक

हिसार । विजेता टीम को सम्मानित करते अतिथिगण।

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

राजस्थान के चित्तौड़गढ़ स्थित इंदिरा गांधी स्टेडियम में हाल ही में आयोजित स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया की ओर से आयोजित 69वें नेशनल स्कूल गेम्स अंडर-14 हैंडबॉल प्रतियोगिता में हरियाणा की बेटियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक अपने नाम कर लिया। कांस्य पदक मुकाबले में हरियाणा टीम ने मणिपुर की मजबूत टीम को पराजित कर यह उपलब्धि हासिल की। हरियाणा टीम के चीफ डी मिशन डीपीई कुलदीप नैन ने बताया कि प्रतियोगिता में हरियाणा की बालिका टीम ने पूरे टूर्नामेंट में अनुशासित खेल और बेहतरीन तालमेल का परिचय दिया। सेमीफाइनल के बाद कांस्य पदक मुकाबले में मणिपुर को पराजित कर टीम ने पदक पर कब्जा जमाया। टीम के मार्गदर्शन में डीपीई वंदना नलवा, डीपीई मीना (करनाल), कोच अशोक पूनिया तथा कोच महावीर पूनिया लगातार खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते रहे। जिले की तीन खिलाड़ी खेल नर्सरी लाडवा से वंशिका (कप्तान), अंशु एवं खुशी ने टीम की सफलता में अहम भूमिका निभाई। जिला शिक्षा अधिकारी वेद दहिया, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी रामरतन सिंह, एईओ कुलदीप मलिक, एईईओ सुशील कुमार,सहित अन्य अधिकारियों ने खिलाड़ियों व कोच को इस उपलब्धि पर बधाई दी।

तिरुपति धाम में 14 के कल्याणोत्सव की तैयारियां जोर-शोर से जारी, उत्साह का माहौल

कल्याणोत्सव के लिए सजने लगा तिरुपति धाम, विभिन्न क्षेत्रों से उमड़ेंगे श्रद्धालु

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

मकर संक्रांति के पावन अवसर पर श्री तिरुपति बालाजी धाम में गोदांबा माता का कल्याणोत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। 14 जनवरी को सायं 4 बजे शुरू होने वाले इस उत्सव की तैयारियां जोर-शोर से जारी हैं और पूरे धाम को रंगीन लडिय़ों व रंग-बिरंगी लाइट से सजाया जा रहा है। कल्याणोत्सव को गोदांबा माता के विवाह महोत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसलिए इस उत्सव में श्रद्धालु नए वस्त्र धारण करके पूरे उत्साह से हिस्सा लेंगे। नाचते, गाते व झूमते हुए भक्तगण भगवान वेंकटेश व माता गोदांबा की आराधना करेंगे। इस दौरान श्रद्धालुओं की आस्था व निष्ठा देखने लायक रहेगी। 14 जनवरी को ही सायं 6 बजे श्रद्धालुओं में सात्विक प्रसाद का वितरण किया जाएगा।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार धनुर्मास में भूदेवी स्वरूपा माता गोदांबा भगवान रंगनाथ को पति रूप में प्राप्त करने के लिए व्रतशील रहती हैं। माता गोदांबा ने धनु संक्रांति से लेकर मकर संक्रांति तक भगवान विष्णु के रंगनाथ स्वरूप की कड़ी उपासना की। धनुर्मास के अंतिम दिन माता गोदांबा का श्रृंगार करके भगवान रंगनाथ व माता गोदांबा का विवाह महोत्सव मनाया जाता है। विशेष बात यह है कि धनुर्मास माह में हर रोज माता गोदांबा की विशेष पूजा-अर्चना की जाती है।

तिरुपति धाम में निकली सवारी शोभा यात्रा

तिरुपति धाम में विधि-विधान से भगवान वेंकटेश जी का अभिषेक किया गया और भगवान वेंकटेश जी, माता लक्ष्मी जी व माता भूदेवी जी की सवारी शोभा यात्रा धूमधाम से निकाली गई। विधानस्वरूप मंत्रोच्चारण के साथ भगवान वेंकटेश जी के साथ माता लक्ष्मी जी व माता भूदेवी जी को रथ पर स्थापित पालकी में विराजमान किया गया। सवारी शोभा यात्रा के दौरान श्रद्धालु जय श्रीमन्नारायण, जय गोविंदा व जय भगवान वेंकटेश के जयघोष करते रहे।

सिबिल स्कोर अच्छा होने के बावजूद क्रेडिट कार्ड क्यों हो जाता है रिजेक्ट

सुझाव | बिजनेस डेस्क

आज के समय में क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल जीवन का एक अहम हिस्सा बन चुका है। लोग ऑनलाइन शॉपिंग, बिल पेमेंट, ट्रैवल और कैशलेस ट्रांजेक्शन के लिए क्रेडिट कार्ड का सहारा लेते हैं। आम धारणा यह है कि अगर आपका सिबिल स्कोर अच्छा है तो बैंक आसानी से आपका क्रेडिट कार्ड अप्रूव कर देगा, लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसा हमेशा जरूरी नहीं है। कई बार सिबिल स्कोर मजबूत होने के बावजूद भी बैंक क्रेडिट कार्ड रिजेक्ट कर देते हैं।

कार्ड की कैटेगरी व इनकम का मेल जरूरी

जानकारों का कहना है कि क्रेडिट कार्ड रिजेक्शन का सबसे बड़ा कारण कार्ड की कैटेगरी और आवेदक की इनकम होती है। उन्होंने कहा, "जिस क्रेडिट कार्ड के लिए आप आवेदन कर रहे हैं, क्या आपकी सैलरी उस कार्ड के लिए तय मानकों के अनुरूप है?" कई बार लोग प्रीमियम या हाई-कैटेगरी कार्ड के लिए आवेदन कर देते हैं, जबकि उनकी इनकम उस स्तर के कार्ड के लिए पर्याप्त नहीं होती। ऐसे मामलों में बैंक अप्रूवल देने से बचता है।

नौकरी की स्थिरता की अहम भूमिका

क्रेडिट कार्ड अप्रूवल में नौकरी की प्रकृति भी महत्वपूर्ण होती है। स्थायी नौकरी करने वाले कर्मचारियों को बैंक अपेक्षाकृत सुरक्षित मानते हैं। वहीं, कॉन्ट्रैक्ट या अस्थायी नौकरी करने वालों के प्रोफाइल को बैंक ज्यादा जोखिम भरा मान सकते हैं, जिससे कार्ड रिजेक्ट होने की संभावना बढ़ती है।

बार-बार आवेदन नुकसानदेह

कम समय में कई बैंकों से क्रेडिट कार्ड के लिए आवेदन करना भी नेगेटिव सिग्नल माना जाता है। बार-बार आवेदन करने से क्रेडिट प्रोफाइल प्रभावित होती है और बैंक इसे वित्तीय दबाव का संकेत मान सकते हैं।

मौजूदा लोन व ईएमआई भी देखता है बैंक

अगर किसी व्यक्ति पर पहले से कई लोन या भारी ईएमआई का बोझ है, तो बैंक नए क्रेडिट कार्ड के लिए मंजूरी देने में हिचकिचाता है। बैंक यह सुनिश्चित करना चाहता है कि ग्राहक की आय और खर्चों में संतुलन बना हुआ हो।

खाते वाले बैंक से कार्ड लेना फायदेमंद

विशेषज्ञों की सलाह है कि क्रेडिट कार्ड के लिए सबसे पहले अपने मौजूदा बैंक को प्राथमिकता दें। जिस बैंक में आपका सेविंग अकाउंट है, वह आपके ट्रांजैक्शन पैटर्न और फाइनेंशियल बिहेवियर को बेहतर तरीके से समझता है, जिससे अप्रूवल के चांस बढ़ जाते हैं।

कम क्रेडिट कार्ड, ज्यादा भरोसेमंद प्रोफाइल

- अंत में विशेषज्ञों का कहना है कि एक व्यक्ति को एक या दो क्रेडिट कार्ड तक ही सीमित रहना चाहिए।
- ज्यादा क्रेडिट कार्ड होने पर बैंक आपके प्रोफाइल को जोखिम भरा मान सकता है, जिससे नए आवेदन रिजेक्ट होने की आशंका बढ़ जाती है।

क्या है सिबिल स्कोर

सिबिल स्कोर एक 3-डिजिट का नंबर होता है जो आपकी क्रेडिट हिस्ट्री को दर्शाता है। यह नंबर 300 से 900 के बीच होता है, और यह आपकी क्रेडिटवर्थीनेस को मापता है। सिबिल स्कोर आपके लायन, क्रेडिट कार्ड, और अन्य क्रेडिट प्रोडक्ट्स के भुगतान इतिहास, क्रेडिट उपयोग, और अन्य कारकों के आधार पर गणना किया जाता है।

सिबिल स्कोर के फायदे

- लायन और क्रेडिट कार्ड के लिए आवेदन करने में मदद करता है
- कम ब्याज दर पर लायन प्राप्त करने में मदद करता है
- क्रेडिटवर्थीनेस को बढ़ाता है
- वित्तीय योजना बनाने में मदद करता है

सिबिल स्कोर को कैसे बढ़ाएं

- समय पर भुगतान करें
- क्रेडिट उपयोग को कम रखें
- क्रेडिट रिपोर्ट में गलतियों को सुधारें
- नए क्रेडिट अकाउंट न खोलें
- क्रेडिट हिस्ट्री को लंबा रखें

निवेशक सोने और चांदी की तरफ कर रहे रुख, पोर्टफोलियो में बनाएं विविधता

अस्थिरता के दौर में गोल्ड या सिल्वर ईटीएफ?

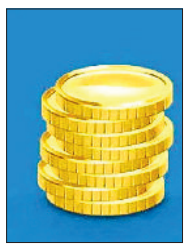

निवेश मंत्रा | बिजनेस डेस्क

पोर्टफोलियो में थोड़ी मात्रा में चांदी जोड़कर विविधता लाएं

सोना और चांदी दोनों की कीमतें डॉलर में तय होती हैं, इसलिए उनकी वैल्यू डॉलर की मजबूती पर निर्भर करती है। मजबूत डॉलर धातुओं को अंतरराष्ट्रीय खरीदारों के लिए महंगा कर देता है, जिससे मांग घट सकती है, जबकि कमजोर डॉलर का प्रभाव उलटा होता है। हालांकि कुछ मैक्रो परिस्थितियों जैसे उच्च मुद्रास्फीति के समय, डॉलर और सोना दोनों एक साथ भी बढ़ सकते हैं।

अमेरिका–वेनेजुएला संघर्ष और बढ़ती भू-राजनीतिक अनिश्चितता के बीच, निवेशक तेजी से सोना और चांदी जैसे पारंपरिक सुरक्षित निवेश विकल्पों की ओर रुख कर रहे हैं। म्यूचुअल फंड निवेशकों के लिए मुख्य सवाल अब यह है कि क्या उन्हें गोल्ड ईटीएफ, सिल्वर ईटीएफ या दोनों का मिश्रण चुनना चाहिए? बाजार विशेषज्ञों का कहना है कि मौजूदा भू-राजनीतिक तनाव के दौरान पोर्टफोलियो में गोल्ड ईटीएफ की भूमिका अधिक होनी चाहिए। क्योंकि सोना अधिक स्थिरता प्रदान करता है और एक भरोसेमंद हेज का काम करता है। सिल्वर ईटीएफ को कम अनुपात में रखा जा सकता है क्योंकि इनमें अधिक उतार-चढ़ाव होता है और इनकी मांग काफी हद तक औद्योगिक उपयोग पर निर्भर है।

अलग-अलग भूमिका है दोनों धातुओं की

दोनों धातुएं पारंपरिक रूप से अलग-अलग भूमिकाएं निभाती हैं। पोर्टफोलियो पोजिशनिंग के दृष्टिकोण से अधिकांश निवेशकों को दोनों में संतुलित निवेश रखना चाहिए। सोना प्राथमिक सुरक्षित-निवेश एंकर बना रहना चाहिए, जबकि चांदी पूरक भूमिका निभाते हुए कुछ चरणों में अधिक रिटर्न दे सकती है। निवेशक यह कभी न भूलें कि कोई भी एसेट क्लास हर समय नहीं जीतता। इसलिए इक्विटी और डेट सहित मल्टी-एसेट पोर्टफोलियो बनाना जरूरी है।

मौजूदा समय में पोर्टफोलियो में गोल्ड ईटीएफ की भूमिका अधिक होनी चाहिए

■

सोना अधिक स्थिरता प्रदान करता है और एक भरोसेमंद हेज का काम करता है

■

निवेशक ध्यान रखें कोई भी एसेट क्लास हर समय नहीं जीतता

नए निवेशक क्या करें?

इस सप्ताह सोना और चांदी मजबूत बढ़त के साथ खुले और बढ़ते भू-राजनीतिक तनावों के बीच एक सप्ताह के उच्चतम स्तर पर पहुंच गए। अनिश्चितता के इस दौर में यह सवाल भी उभरता है कि पहली बार निवेश करने वालों के लिए फोकस कहां होना चाहिए? ऐतिहासिक रूप से भू-राजनीतिक तनाव के समय सोना मजबूत सुरक्षित-निवेश माना गया है और केंद्रीय बैंकों की अधिक भागीदारी, व्यापक वैश्विक स्वीकार्यता और गहरी लिक्विडिटी के कारण सोना आमतौर पर संकट के समय बेहतर प्रदर्शन करता है। पहली बार निवेश करने वालों को सोने के ईटीएफ में मुख्य सुरक्षित-निवेश करना चाहिए, लेकिन पोर्टफोलियो में थोड़ी मात्रा में चांदी भी जोड़कर विविधता लाई जा सकती है।

मुद्रा विनिमय दर का भी होता है असर

मुद्रा विनिमय दरों का उतार-चढ़ाव भी सोना और चांदी ईटीएफ से मिलने वाले रिटर्न को प्रभावित करता है। सोना एक कीमती धातु के रूप में, आम तौर पर डॉलर और ब्याज दरों में बदलाव के प्रति अधिक संवेदनशील होता है, जबकि चांदी मुद्रा उतार-चढ़ाव के अलावा वैश्विक वृद्धि की उम्मीदों पर भी प्रतिक्रिया करती है। अमेरिका–वेनेजुएला संघर्ष ने तेल की कीमतों और मुद्रास्फीति को लेकर चिंताएं भी बढ़ा दी हैं। बढ़ती तेल कीमतें मुद्रास्फीति को ऊपर धकेल सकती हैं, जिससे आम तौर पर कीमती धातुओं को समर्थन मिलता है क्योंकि निवेशक बढ़ती लागत के खिलाफ हेज की तलाश करते हैं।

डॉलर की कीमत कैसे करेगी प्रभावित?

वेनेजुएला ऑपरेशन के बाद दिए गए बयान में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि अब हम वेनेजुएला को चलाने जा रहे हैं। ट्रंप ने यह भी कहा कि अमेरिका अन्य देशों को वेनेजुएला का काफी तेल बेचेगा। इन हालात में निवेशकों के लिए महत्वपूर्ण सवाल यह भी है कि डॉलर की मजबूती और मुद्रा-विनिमय उतार-चढ़ाव सोना और चांदी की कीमतों को कैसे प्रभावित करते हैं? असल में सोना और चांदी दोनों ही आम तौर पर डॉलर के विपरीत दिशा में चलते हैं। मजबूत डॉलर कीमतों पर दबाव डालता है, जबकि कमजोर डॉलर उन्हें सपोर्ट करता है। सोना मुद्रा और ब्याज-दर के उतार-चढ़ाव के प्रति अधिक संवेदनशील है, जबकि चांदी पर आर्थिक और औद्योगिक गतिविधि का भी प्रभाव होता है। सोना और चांदी दोनों की कीमतें डॉलर में तय होती हैं, इसलिए उनकी वैल्यू डॉलर की मजबूती पर निर्भर करती है। मजबूत डॉलर धातुओं को अंतरराष्ट्रीय खरीदारों के लिए महंगा कर देता है, जिससे मांग घट सकती है, जबकि कमजोर डॉलर का प्रभाव उलटा होता है। हालांकि कुछ मैक्रो परिस्थितियों जैसे उच्च मुद्रास्फीति के समय, डॉलर और सोना दोनों एक साथ भी बढ़ सकते हैं। इसके अलावा, चांदी के औद्योगिक उपयोग के कारण कमजोर डॉलर अक्सर इस कीमती धातु में तेज बढ़त को ट्रिगर करता है क्योंकि विदेशी विनिर्माण मांग बढ़ जाती है।

आक्रामक रणनीति नहीं रीबैलेंसिंग करें

एक सवाल यह भी है कि निवेशकों के लिए मौजूदा परिस्थिति में क्या यह समय एक्सपोजर बढ़ाने का है या सिर्फ मौजूदा गोल्ड और सिल्वर ईटीएफ पोर्टफोलियो को रीबैलेंस करने का? दूसरी बात क्या बढ़ती मुद्रास्फीति या तेल कीमतें गोल्ड बनाम सिल्वर के दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकती हैं? ऐसे में मल्टी-एसेट पोर्टफोलियो बनाना जरूरी है, क्योंकि कोई भी एसेट हमेशा नहीं जीतता। इसके बावजूद मौजूदा परिस्थितियों को देखते हुए कीमती धातुएं अब भी पोर्टफोलियो की सुरक्षा और विविधता के लिए आकर्षक विकल्प हैं। साथ ही निवेशक आक्रामक रूप से एक्सपोजर बढ़ाने के बजाय मौजूदा होल्डिंग्स को रीबैलेंस करें और बढ़ती मुद्रास्फीति और तेल कीमतें आम तौर पर सोने को समर्थन देती ही हैं।

नए साल में करें नई शुरुआत कुछ बातों पर रखें फोकस शेयर बाजार और म्यूचुअल फंड तेजी से लोकप्रिय हो रहे

निवेश, बचत और वेल्थ बनाने के लिए तैयार करें बेहतर रणनीति

जानकारी | बिजनेस डेस्क

आज के समय में स्वास्थ्य का खर्च इतना ज्यादा हो गया है कि अगर आपको या परिवार के किसी सदस्य को अस्पताल में भर्ती होना पड़ जाए तो आपकी अच्छी खासी बचाई गई रकम इलाज और अस्पताल का बिल भरने में खर्च हो सकती है। इससे आपके निवेश की योजना और निवेश के लक्ष्यों के लिए कदम आगे बढ़ा पाना बेहद मुश्किल हो जाएगा।

नए साल पर सभी कुछ न कुछ संकल्प लेते हैं। इसलिए निवेश के क्षेत्र में भी यह समय कुछ न कुछ बेहतर रणनीति बनाने का है। नया साल 2026 शुरू हो गया है। कमाई, बचत और निवेश को लेकर भी नए साल में कुछ न कुछ रिजॉल्यूशन जरूर लें। नए निवेशक जहां नई शुरुआत के लिए विकल्प और तरीकों पर बात करेंगे, वहीं जो लोग पहले से निवेश कर रहे हैं, वो कुछ न कुछ बदलाव या डायवर्सिफिकेशन के बारे में सोच रहे होंगे। हर कोई अपनी-अपनी समझ और तरीकों से अपनी फाइनेंशल प्लानिंग बनाता और उस पर आगे बढ़ता है। निवेश के तेजी से उभरते विकल्पों की बात करें तो शेयर बाजार और म्यूचुअल फंड तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। नए साल की नई शुरुआत के बीच एक्सपर्ट के नजरिए से समझते हैं कि निवेशक को 2026 में किन बातों पर फोकस करना चाहिए, जिससे कि कमाई, बचत और निवेश का संतुलन बना रहे, वेल्थ बनता रहे और फाइनेंशियल लक्ष्यों को हासिल करना आसान रहे।

जीवन बीमा व स्वास्थ्य बीमा लिया है?

निवेश की शुरुआत करने से पहले यह सुनिश्चित कर लेना बेहद जरूरी है कि क्या आपने पर्याप्त जीवन बीमा और स्वास्थ्य बीमा कवर लिया है या नहीं? अगर नहीं है या पर्याप्त नहीं है, तो 2026 में सबसे पहले आप ये दोनों कवर जरूर करा लें। जीवन बीमा आपके परिवार और आप पर निर्भर लोगों को उस समय आर्थिक मदद करता है, जब कोई अनहोनी होती है। इसी तरह, पर्याप्त स्वास्थ्य बीमा भी रखना जरूरी है।

क्या फाइनेंशियल लक्ष्यों की समीक्षा की

नए साल में सबसे अहम बात कि अपने फाइनेंशियल लक्ष्यों की समीक्षा करें। ऐसा इसलिए जरूरी है कि हर साल बाजार में उठापटक, रिस्क प्रोफाइल, इनकम और खर्चों में उतार-चढ़ाव है। ऐसे में इस बात का आकलन करना अहम हो जाता कि क्या आपने निवेश के जिन एसेट क्लास में पैसा लगाया है, उनकी परफार्मेंस कैसी चल रही है, जोखिम उठाने की क्षमता कम-ज्यादा हुई है या फिर आपके फाइनेंशियल लक्ष्य हासिल करने को लेकर कैसा संकेत है?

मार्केट साइकिल समझना क्यों जरूरी?

नए साल के साथ हमेशा यह भी ध्यान रखना चाहिए कि बाजार में निवेश का साइकिल कैसा भी हो आपको धैर्य रखना चाहिए। मार्केट साइकिल में उतार-चढ़ाव आना स्वाभाविक बात है। कभी बाजार तेजी में होता है तो कभी मंदी में, लेकिन ऐसे समय में निवेश बनाए रखना सबसे जरूरी होता है। घबराकर निवेश निकालने से नुकसान होने की आशंका बढ़ जाती है।

धैर्य रखें, लाभ जरूर मिलेगा

ऐसे में अगर पर धैर्य रखते हैं और लंबे समय तक निवेश में बने रहते हैं, उन्हें बाजार के पूरे साइकिल का लाभ भी आपको मिलेगा। नियमित निवेश, जैसे एसआईपी, बाजार की गिरावट में भी औसत लागत कम करने में मदद करता है। मार्केट साइकिल का इतिहास बताता है कि यह समय के साथ संभलता है और नया हाई बनाता है। इसलिए शॉर्ट टर्म उतार-चढ़ाव में पैनिक होने की बजाय लंबी अवधि के लक्ष्यों को हासिल करने पर फोकस करना चहिए।

एसआईपी शुरू करें या निवेश बढ़ाएं

कहा जाता है कि नई शुरुआत करने से ही नए मौके बनते हैं। इसलिए अगर म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहते हैं, तो सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए निवेश शुरू कर सकते हैं। वहीं अगर पहले से निवेश कर रहे हैं तो एसआईपी की राशि बढ़ा सकते हैं। एसआईपी शुरू करना या मौजूदा निवेश को बढ़ाना दोनों ही समझदारी भरे फैसले हो सकते हैं। एसआईपी के जरिए नियमित निवेश करने से बाजार की गिरावट का फायदा मिलता है और औसत लागत कम होती है। वहीं, जिन निवेशकों की कमाई स्थिर है और वे अपने लक्ष्यों को लेकर स्पष्ट हैं, वे अपने निवेश की राशि बढ़ाकर लंबे समय में बेहतर रिटर्न पा सकते हैं। निवेश हमेशा जोखिम उठाने की क्षमता और समय सीमा के अनुसार करना जरूरी है।

लोन चुकाने के लिए न निकालें ईपीएफ से पैसा हो सकता है नुकसान

बिजनेस डेस्क

बिजनेस डेस्क। कई सैलरीड लोगों के लिए ईपीएफ (कर्मचारी भविष्य निधि) की बचत से लोन चुकाना बहुत लुभावना लगता है। लोग सोचते हैं कि इससे बड़ा लोन खत्म, हर महीने का तनाव कम और जीवन कर्जमुक्त हो जाता है। लेकिन पर्सनल फाइनेंस एक्सपर्ट चेतावनी देते हैं कि खासकर होम लोन चुकाने के लिए ईपीएफ की रकम निकालना लंबे समय में काफी महंगा पड़ सकता है, जिसे ज्यादातर लोग नजरअंदाज कर देते हैं।

ईपीएफ है रिटायरमेंट का सहारा

ईपीएफ को रिटायरमेंट के लिए बनाया गया है। ये एक मजबूरी वाला लंबे समय का निवेश है। कर्मचारी और कंपनी दोनों की तरफ से पैसा जाता है और सालाना करीब 8.25 प्रतिशत ब्याज मिलता है, वो भी कंपाउंडिंग के साथ। सबसे खास बात यह है कि ब्याज टैक्स-फ्री है। इसलिए ये सैलरीड लोगों के लिए सबसे अच्छा और कम रिस्क वाला तरीका है पैसा बढ़ाने का। ईपीएफओ (कर्मचारी भविष्य निधि संगठन) के नियमों के मुताबिक, ईपीएफ से निकासी बहुत सीमित है ताकि रिटायरमेंट का पैसा सुरक्षित रहे। आम लोन जैसे पर्सनल लोन या क्रेडिट कार्ड का बिल चुकाने के लिए ईपीएफ से पैसा नहीं निकाल सकते। सिर्फ हाउसिंग लोन चुकाने के लिए ही कुछ खास शर्तों के साथ निकासी की इजाजत है, जैसा कि ईपीएफ स्कीम, 1952 में लिखा है।

होम लोन समय के साथ हल्का क्यों लगता है

होम लोन के मामले में समय के साथ बोझ कम होता जाता है। ईएमआई चलते-चलते ब्याज का हिस्सा घटता है और मूल रकम का हिस्सा बढ़ता है। साथ ही, आमतौर पर सैलरी बढ़ती है, इन्फ्लेशन के साथ करियर आगे बढ़ता है, तो ईएमआई का बोझ रिलेटिव तरीके से कम लगने लगता है। टैक्स का भी फायदा है। पुराने टैक्स रिजीम में प्रिंसिपल और ब्याज दोनों पर छूट मिलती है, जिससे लोन की असली लागत कम हो जाती है। नए टैक्स रिजीम में ये फायदा नहीं है, लेकिन एक्सपर्ट कहते हैं कि ईपीएफ का लंबे समय तक कंपाउंडिंग इतना मजबूत है कि वो लोन जल्दी चुकाने से मिलने वाली बचत से ज्यादा फायदा देता है।

ब्याज दर का जाल

पहली नजर में आंकड़े थोड़े भ्रमित कर सकते हैं। अभी होम लोन की दरें करीब 7-7.5 प्रतिशत के आसपास हैं, जो ईपीएफ के 8.25 प्रतिशत से थोड़ी कम लगती हैं। फर्क छोटा-सा दिखता है। लेकिन ईपीएफ का ब्याज टैक्स-फ्री है, तो 30 प्रतिशत टैक्स स्लैब वाले के लिए ये 8.25 प्रतिशत करीब 11 प्रतिशत के बराबर टैक्सेबल रिटर्न देता है। इतना पोस्ट-टैक्स रिटर्न बहुत कम सुरक्षित निवेश देते हैं।

कब ईपीएफ निकालना सही

ईपीएफओ के नियमों के अनुसार, हाउसिंग लोन चुकाने के लिए ईपीएफ से पैसा सिर्फ एक बार जीवन में निकाला जा सकता है। इसके लिए कुछ शर्तें हैं, जैसे कम से कम 10 साल की सदस्यता, निकासी की सीमा वेतन, बैलेंस या बकाया लोन से जुड़ी होती है। पैसा सीधे लेंडर को जाता है। एक्सपर्ट कहते हैं कि ईपीएफ निकालना सिर्फ कुछ खास स्थितियों में सोचना चाहिए, जैसे: रिटायरमेंट के करीब पहुंच चुके हों और ईपीएफ में काफी ज्यादा बचत हो। बहुत ज्यादा कैश-फ्लो का दबाव हो और कोई दूसरा रास्ता न बचा हो। लोन की बाकी रकम कुल रिटायरमेंट कोष के मुकाबले बहुत छोटी हो। ऐसे मामलों में भी पहले अच्छे से कैलकुलेशन करना और किसी प्रोफेशनल से सलाह लेना बहुत जरूरी है।

इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश 6% घटा, पर फ्लेक्सी-कैप ने बनाया रिकॉर्ड

रिपोर्ट | बिजनेस डेस्क

दिसंबर में शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव का असर म्यूचुअल फंड निवेश पर भी साफ नजर आया। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया यानी एएमएफआई के ताजा आंकड़ों के मुताबिक दिसंबर में इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में निवेश 6% घटकर 28,054 करोड़ रुपये रह गया। जबकि नवंबर में यह आंकड़ा 29,911 करोड़ रुपये था। अगर साल-दर-साल के आधार पर तुलना करें, तो गिरावट और भी साफ दिखती है। दिसंबर 2024 के मुकाबले दिसंबर 2025 में इक्विटी फंड्स में निवेश 32% कम रहा। पिछले साल दिसंबर में इक्विटी फंड्स में 41,155 करोड़ रुपये का निवेश हुआ था। हालांकि पूरे कैलेंडर वर्ष 2025 की बात करें, तो निवेशकों ने इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में कुल 3.03 लाख करोड़ रुपये लगाए।

फ्लेक्सी-कैप फंड्स पर निवेशकों का भरोसा बरकरार

इक्विटी म्यूचुअल फंड्स की कुल 11 कैटेगरी में से 9 में दिसंबर के दौरान निवेश आया। सिर्फ डिविडेंड यील्ड फंड और ईएलएसएस फंड्स से पैसा निकला। इन सभी कैटेगरी में फ्लेक्सी-कैप फंड्स सबसे आगे रहे। इस कैटेगरी में दिसंबर के दौरान 10,019 करोड़ रुपये का नेट निवेश हुआ, जो अब तक का सबसे ऊंचा स्तर है। निवेशक में इस बात पर ज्यादा भरोसा नजर आया कि फ्लेक्सी-कैप फंड्स के मैनेजर बाजार की स्थिति के हिसाब से लार्ज, मिड और स्मॉल कैप शेयर्स में निवेश को एडजस्ट कर सकते हैं।

मिडकैप और लार्ज एंड मिडकैप फंड्स भी चर्चा में

फ्लेक्सी-कैप के बाद मिडकैप फंड्स दूसरे नंबर पर रहे। दिसंबर में इन फंड्स में 4,175 करोड़ रुपये का निवेश हुआ। वहीं लार्ज एंड मिडकैप फंड्स में 4,093 करोड़ रुपये की आमद दर्ज की गई। इससे यह संकेत मिलता है कि निवेशक अभी भी ग्रोथ की संभावनाओं वाले शेयरों में रुचि बनाए हुए हैं।

सेक्टोरल और स्मॉलकैप फंड्स में गिरावट

सेक्टोरल और थीमैटिक फंड्स के लिए दिसंबर थोड़ा फीका रहा. इन फंड्स में निवेश महीने-दर-महीने आधार पर 49% घटकर 945 करोड़ रुपये रह गया। नवंबर में यह आंकड़ा 1,864 करोड़ रुपये था। स्मॉलकैप फंड्स में भी 13% की गिरावट देखने को मिली. दिसंबर में इन फंड्स में 3,823 करोड़ रुपये का निवेश हुआ। बाजार की वैल्यूएशन और अस्थिरता को देखते हुए निवेशक स्मॉलकैप से थोड़ा सतर्क नजर आए।

शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव का असर म्यूचुअल फंड पर भी दिखा

ईएलएसएस और डिविडेंड यील्ड फंड्स से पैसा निकला

दिसंबर में टैक्स सेविंग ईएलएसएस फंड्स से 717 करोड़ की निकासी हुई। वहीं, डिविडेंड यील्ड फंड्स से 254 करोड़ बाहर चले गए। निवेशकों की बदली प्राथमिकताओं का असर यहां साफ दिखा।

पूरे साल 2025 में कौन सी इक्विटी कैटेगरी रही आगे

कैलेंडर वर्ष 2025 की बात करें, तो फ्लेक्सी-कैप फंड्स पूरे साल निवेशकों की पहली पसंद रहे। इस कैटेगरी में साल भर में 80,978 करोड़ रुपये का निवेश आया। इसके बाद स्मॉलकैप फंड्स में 52,321 करोड़ रुपये और मिडकैप फंड्स में 49,939 करोड़ की नेट इनफ्लो दर्ज की गई।

डेट फंड्स से बड़े पैमाने पर निकाले गए पैसे

जहां इक्विटी में निवेश धीमा पड़ा, वहीं डेट म्यूचुअल फंड्स में दिसंबर के दौरान भारी निकासी देखने को मिली। इस महीने डेट फंड्स से कुल 1.32 लाख करोड़ रुपये बाहर निकल गए। नवंबर में यह निकासी 25,692 करोड़ रुपये थी। दिलचस्प बात यह है कि दिसंबर 2024 में भी डेट फंड्स से करीब 1.27 लाख करोड़ रुपये की निकासी हुई थी।

16 में से 14 डेट फंड कैटेगरी में आउटफ्लो

डेट फंड्स की 16 कैटेगरी में से सिर्फ ओवरनाइट फंड्स और फ्लोटर फंड्स में निवेश आया। बाकी 14 कैटेगरी में पैसा निकला। लिक्विड फंड्स से सबसे ज्यादा 47,307 करोड़ रुपये की निकासी हुई। इसके बाद मनी मार्केट फंड्स से 40,464 करोड़ रुपये बाहर निकले।

साल भर में डेट फंड्स का हाल

पूरे 2025 में डेट म्यूचुअल फंड्स में कुल 1.19 लाख करोड़ रुपये का नेट निवेश आया। मनी मार्केट फंड्स इस दौरान सबसे आगे रहे, जिनमें 66,993 करोड़ रुपये का निवेश हुआ। वहीं गिल्ट फंड्स में पूरे साल में 5,680 करोड़ रुपये की सबसे ज्यादा निकासी दर्ज की गई।

हाइब्रिड फंड्स में निवेश भी घटा

दिसंबर में हाइब्रिड फंड्स में निवेश 19% घटकर 10,755 करोड़ रुपये रह गया। नवंबर में यह आंकड़ा 13,299 करोड़ रुपये था, जबकि दिसंबर 2024 में हाइब्रिड फंड्स में सिर्फ 4,369 करोड़ रुपये का निवेश हुआ था। पूरे 2025 में हाइब्रिड फंड्स में कुल 1.56 लाख करोड़ रुपये का निवेश आया। हाइब्रिड फंड्स की 6 कैटेगरी में से कंजर्वेटिव हाइब्रिड फंड्स को छोड़कर सभी में निवेश पॉजिटिव रहा। मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड्स में दिसंबर में नेट इनफ्लो 7,425 करोड़ रुपये का हुआ। इसके बाद एग्रेसिव हाइब्रिड फंड्स में 1,513 करोड़ रुपये का निवेश आया।

पैसिव फंड्स और ईटीएफ में उछाल

इंडेक्स फंड्स और ईटीएफ जैसी दूसरी स्कीम्स में दिसंबर के दौरान निवेश में 74% की तेज बढ़ोतरी हुई। नवंबर में जहां इन फंड्स में 15,385 करोड़ रुपये आए थे, वहीं दिसंबर में यह आंकड़ा बढ़कर 26,723 करोड़ रुपये हो गया। दिसंबर 2024 में पैसिव फंड्स में कुल निवेश सिर्फ 784 करोड़ रुपये था, ऐसे में इस साल की बढ़त काफी मजबूत मानी जा रही है।

खबर संक्षेप

भाजपा जिला स्तर पर मनाएगी लोहड़ी

फतेहाबाद। भाजपा ओबीसी मोर्चा की बैठक जिला अध्यक्ष बलदेव सैनी की अध्यक्षता में हुई। बैठक में 13 जनवरी को जिला स्तरीय लोहड़ी व मकर संक्रांति कार्यक्रम करने का निर्णय लिया गया। सैनी ने बताया कि इस पर्व पर भाजपा जिलाध्यक्ष प्रवीण जोड़ा मुख्यातिथि रहेंगे तथा सभी कार्यकर्ता मिलकर लोहड़ी को धूमधाम से मनाएंगे।

लोहड़ी पर काली माता मंदिर में लगेगा भंडारा

ओढां। गौशाला रोड पर स्थित श्री काली माता मंदिर,ओढ़ा में 13 जनवरी को विशाल लंगर का लगाया जाएगा। काली माता मंदिर कमेटी के उपप्रधान जसविंदर सिंह बब्बू ने बताया कि लोहड़ी के पावन त्यौहार पर मंदिर कमेटी व गांववासियों के सहयोग से छोले पूरी का लंगर लगाया जाएगा। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं से निवेदन किया कि वे आगामी 13 जनवरी को माता के दरबार में आकर माथा टेककर माता रानी का आशीर्वाद प्राप्त करें और छोले-पूरी का प्रसाद ग्रहण करें।

हेरोइन बरामदगी मामले में दो आरोपी गिरफ्तार

सिरसा। रोड़ी थाना पुलिस ने अलग-अलग जगहों से हेरोइन सप्लाई करने के मामलें में दो युवकों को गिरफ्तार किया है। रोड़ी थाना प्रभारी इंस्पेक्टर शमशेर सिंह ने बताया कि 7 ग्राम 33 मिलीग्राम हेरोइन बरामदगी मामले में संलिप्त सप्लायर आरोपी स्वर्णजीत सिंह निवासी संगा पत्ती रोड़ी को रोड़ी क्षेत्र से गिरफ्तार कर लिया है।

चूरापोस्त तस्करी के दो आरोपी पकड़े, केस

सिरसा। डिंग थाना पुलिस ने वर्ष 2024 में डिंग थाना में लाखों रुपए के डोडा पोस्त तस्करी के मामले में संलिप्त दो आरोपियों को राजस्थान जेल से प्रोडक्शन वारंट पर लेकर गिरफ्तार कर लिया है। एसपी दीपक सहारण ने बताया कि पुलिस ने बीते वर्ष डिंग थाना क्षेत्र के गांव मोचिवाली से जोधकां रोड़ पर सडक़ किनारे एक ऑल्टो कार की शक के आधार पर तलाशी ली तो कार में से 79 किलो 885 ग्राम चूरापोस्त बरामद हुआ था।

स्कूल में सात दिवसीय एनएसएस शिविर शुरू

सिरसा। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रामपुरा ढिल्लों में सात दिवसीय एनएसएस शिविर का शनिवार को शुभारंभ किया गया। एनएसएस कार्यक्रम प्रभारी अनिल कुमार प्रवक्ता अंग्रेजी ने बताया कि सरस्वती वंदना व योग के साथ इस शिविर की शुरूआत हुई। उन्होंने विद्यार्थियों को एनएसएस के महत्व व योग के बारे में विस्तार से जानकारी दी। अनिल कुमार ने बताया कि राष्ट्रीय सेवा योजना का महत्व युवाओं में सामाजिक और नागरिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करने, व्यक्तित्व निर्माण, नेतृत्व क्षमता और समाज के प्रति जागरूकता बढ़ाने में है, जिससे वे राष्ट्र निर्माण और सामुदायिक विकास में सक्रिय भूमिका निभा सकें। इसका आदर्श वाक्य नॉट मी, बट यू निस्वार्थ सेवा और समाज के उत्थान का संदेश देता है, जो छात्रों को व्यावहारिक जीवन में सेवा, सहानुभूति और नेतृत्व सिखाता है, जिससे भविष्य का निर्माण होता है।

नशे के खिलाफ जंग : इग कारोबारियों पर कार्रवाई न होने पर लगाएंगे पक्का मोर्चा

तस्करों की धमकियां भी रही बेअसर गुरुनानकपुरा में निकली जागरूकता रैली

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

नशा तस्करों द्वारा दी गई तमाम धमकियों को दरकिनार करते हुए महाशक्ति चैरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक भवानी सिंह ने शनिवार को नशे के गढ़ के रूप में मशहूर गुरूनानकपुरा मोहल्ले में 'एक संवाद-नशे के खिलाफ' जागरूकता यात्रा निकाली। इस यात्रा में सैंकड़ों की संख्या में भाग लिया और नशे के खिलाफ आवाज बुलंद की। रतिया रोड स्थित एसबीआई बैंक के बाहर से शुरू हुई यह यात्रा गुरूनानकपुरा मोहल्ले की हर गली में पहुंची और भवानी सिंह ने घर-घर जाकर लोगों से नशे से दूर रहने और समाज को नशामुक्त करने के इस अभियान में सहयोग की अपील की। भवानी सिंह ने दोहराया कि वह किसी तरह की धमकियों से डरने वाले नहीं है। जीवन की आखिरी सांस तक वह नशे के खिलाफ लड़ाई जारी रखेंगे।

फतेहाबाद। गुरूनानकपुरा में निकाली गई जागरूकता यात्रा।

भवानी सिंह द्वारा इस जागरूकता यात्रा को लेकर सत्ताधारी भाजपा के अलावा कांग्रेस, इनेलो और जजपा नेताओं को भी आमंत्रित किया गया था लेकिन कोई भी नेता इस यात्रा में शामिल नहीं हुआ। यात्रा के दौरान मौहल्ले के लोगों ने भी इस अभियान का समर्थन किया और कई ऐसे खाली प्लाट व मकान दिखाए, जो नशे के अड्डे बने हुए हैं। वहां कई खाली सीरिंज भी पड़े दिखाई दिए। यात्रा से पूर्व एसबीआई बैंक के बाहर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भवानी सिंह ने कहा कि उन्होंने पिछले साल जिले को नशामुक्त करने का संकल्प लिया था। इस दौरान ट्रस्ट की टीमें जिले के जिस भी क्षेत्र में गई, उन सबके तार फतेहाबाद के गुरूनानकपुरा मोहल्ले से जुड़े पाए। उन्होंने कहा कि आज कुछ नशा तस्करों के कारण पूरा गुरूनानकपुरा मोहल्ला नशे के गढ़ के रूप में बदनाम हो चुका है। इस क्षेत्र में केवल एक ही गली ऐसी है जहां सबसे ज्यादा नशा बिकता है लेकिन पुलिस प्रशासन इन पर रोक नहीं लगा पाई है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने भी ऐतिहासिक निर्णय लिया है कि जिस भी क्षेत्र में नशा बिक्री की ज्यादा शिकायतें आएंगी, उसके लिए उस क्षेत्र का थाना प्रभारी जिम्मेवार होगा और उसकी डिमोशन भी होगी। भवानी सिंह ने इस निर्णय का स्वागत करते हुए कहा कि सरकार को थाना प्रभारी के अलावा बड़े अधिकारियों की भी जवाबदेही तय करनी चाहिए। उन्होंने लोगों से सहयोग की अपील करते हुए कहा कि अगर हमें अपनी आने वाली पीढ़ी को बचाना है तो आज हम सभी को एकजुट होकर नशे के खिलाफ आवाज उठानी होगी। एक अकेला आदमी इस सामाजिक बुराई को दूर नहीं कर सकता। इसके लिए लोगों को स्वयं जागरूक होना होगा और आगे आना होगा।

नशा तस्करों को शहर से खदेड़ेंगे

भवानी सिंह ने कहा कि महाशक्ति चैरीटेबल ट्रस्ट व उनकी टीम ने सर्वसम्मति से फैसला से लिया है कि यदि एक माह के अंदर पुलिस प्रशासन नशा कारोबारियों को रोकने में असफल रहा तो ट्रस्ट की पूरी टीम गुरूनानक पुरा मौहल्ले के साथ पक्का मोर्चा लगाएगी और नशा कारोबारियों को खदेडने का काम करेगी। इस अवसर पर सरपंच मोहन गढ़वाल, दलबीर मताना, देवेन्द्र सरपंच, करण सरपंच, जोगिन्द्र सरपंच, सुखराज सरपंच, कृष्ण सरपंच, पार्षद राजू तूडेवाल, बेअन्त सिंह, डलवाल पंथ से बाबा गौरा सिंह, अशोक नम्बरदार, अशोक रत्ताटिब्बा, यादविन्द्र सरपंच, मनोज कुमार, मदन कुमार, शर्माचंद लाली, अमन राघव, रजत खांडा, गुरदीप सिंह सहित गणमान्य लोग उपस्थित थे। यात्रा के दौरान खुफिया तंत्र, पुलिस सिक्योरिटी पूरी तरह एक्टिव रही। गुरुनानकपुरा चौकी के पुलिसकर्मी गलियों में मौजूद रहे। साथ ही 4 नाकों पर पुलिसकर्मी एक्टिव रहे।

फतेहाबाद। राष्ट्रीय बैंडी प्रशिक्षण कैंप में भाग लेते हरियाणा के खिलाड़ी।

कजाकिस्तान में दमखम दिखाएंगे बैंडी खिलाड़ी

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

देहरादून के हिमाद्रि इंटरनेशनल आइस रिंक में इंडियन बैंडी एसोसिएशन द्वारा आयोजित 6वां राष्ट्रीय बैंडी प्रशिक्षण कैंप में फतेहाबाद के खिलाडिय़ों ने भी भाग लिया और अपने शानदार प्रदर्शन से जिले व प्रदेश का नाम रोशन किया। यह जानकारी देते हुए हरियाणा बैंडी एसोसिएशन के महासचिव एवं फतेहाबाद के प्रमुख कोच प्रमोद कौशिक ने बताया कि इस प्रशिक्षण कैम्प में हरियाणा राज्य से 12 महिला व पुरुष खिलाडिय़ों ने भाग लिया था। इस कैंप का मुख्य उद्देश्य खिलाडिय़ों में बैंडी खेल के कौशल सीखना रहा। साथ ही कजाकिस्तान में आयोजित होने वाली अंतर्राष्ट्रीय बैंडी प्रतियोगिता के लिए टीम का चयन करना रहा। इस कैंप का प्रशिक्षण और खिलाडिय़ों का चयन रसियन बैंडी कोच लिबीदेव डैनिश द्वारा किया गया, जिसमें हरियाणा से अंडर 14 आयु वर्ग में जतिन सोनी, महादेश कुंडू रोहतक, परीक्षित हिसार, अभय रोहतक, गुरशेज सिंह फतेहाबाद शामिल है। इसके अलावा अंडर 17 आयु वर्ग में कपिश कौशिक फतेहाबाद, यश राणा सोनीपत, हिमांशु हिसार, आदित्य भुना, महिला वर्ग में डेजी, सिमरन कौर, नवनीत कौर, वंशिका शर्मा और वैशाली शर्मा का चयन नेशनल टीम हुआ है जो कि अंतर्राष्ट्रीय बैंडी प्रतियोगिता, कजाकिस्तान में देश का प्रतिनिधित्व करेंगे। हरियाणा बैंडी एसोसिएशन के प्रधान श्रीभगवान शास्त्री ने सभी खिलाडिय़ों को राष्ट्रीय टीम में चयन होने पर शुभकामनाएं दी।

मनरेगा को कमजोर करने के खिलाफ आज प्रदेशभर में प्रदर्शन करेगी कांग्रेस : सैलजा

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं सिरसा लोकसभा सांसद कुमारी सैलजा ने केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार पर मनरेगा को कमजोर करने का गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि भाजपा सरकार कांग्रेस शासनकाल में गरीबों को मिले संवैधानिक और कानूनी अधिकारों को एक-एक कर खत्म करने की साजिश कर रही है। उन्होंने कहा कि मनरेगा का केवल नाम नहीं बदला गया है, बल्कि उसकी आत्मा विशेषकर महात्मा गांधी की आत्मा को समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है, जिसे कांग्रेस किसी भी कीमत पर सहन नहीं करेगी।सांसद सैलजा शनिवार को फतेहाबाद के होटल गंगा में पत्रकारों से बातचीत कर रही थी। इस दौरान सांसद ने मनरेगा को लेकर केंद्र सरकार की मंशा पर कई गंभीर सवाल खड़े किए और कहा कि मनरेगा के माध्यम से कांग्रेस ने गरीबों को न्यूनतम मजदूरी की कानूनी गारंटी दी थी, लेकिन केंद्र सरकार नियमों और प्रक्रियाओं में बदलाव कर इस गारंटी को खत्म करने का ताना-बाना बुन रही है। यह पूरी तरह गरीब-विरोधी सोच का परिणाम है। उन्होंने स्पष्ट किया कि मनरेगा कमजोर हुई तो इसका सीधा असर ग्रामीण गरीबों, मजदूरों और महिलाओं पर पड़ेगा, जिसे कांग्रेस कभी स्वीकार नहीं करेगी।सांसद कुमारी सैलजा ने बताया कि केंद्र सरकार के मनरेगा विरोधी फैसलों के खिलाफ कांग्रेस देशव्यापी आंदोलन कर रही है। इसी क्रम में 11 जनवरी को हरियाणा के सभी जिला मुख्यालयों पर प्रदर्शन करेंगे।

फतेहाबाद। पत्रकारों से बातचीत करते सांसद कुमारी सैलजा।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर फतेहाबाद के विधायक बलवान सिंह दौलतपुरिया, कांग्रेस जिलाध्यक्ष अरविंद शर्मा, पूर्व विधायक प्रहलाद सिंह गिल्लाखेड़ा, जयपाल सिंह लाली, मंगतराम लालवास सहित अनेक वरिष्ठ नेता मौजूद रहे।

अंडर-15 क्रिकेट टूर्नामेंट का शुभारंभ, भूना ने रतिया को हराया

हरिभूमि न्यूज ⏭ रतिया

सनशाइन क्रिकेट अकादमी, भुना के मैदान में फतेहाबाद डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन के तत्वावधान में आयोजित अंडर-15 क्रिकेट टूर्नामेंट का पहला मुकाबला रतिया व भुना की टीमों के बीच खेला गया। यह मुकाबला 35 ओवर के फॉर्मेट में आयोजित किया गया। टॉस के बाद पहले बल्लेबाजी करते हुए रतिया की टीम भुना के गेंदबाजों के सामने टिक नहीं सकी और पूरी टीम मात्र 77 रन पर ऑलआउट हो गई। रतिया की ओर से कोई भी बल्लेबाज बड़ी पारी नहीं खेल सका। भुना की ओर से कुशल गिल ने शानदार गेंदबाजी करते हुए 5 विकेट झटके, जबकि अगम कंबोज ने 4 विकेट हासिल कर रतिया की पारी को समेटने में अहम भूमिका निभाई। छोटे लक्ष्य का पीछा करने उतरी भुना की टीम ने संयमित और आत्मविश्वासपूर्ण खेल का प्रदर्शन करते हुए 25 ओवर में 8 विकेट के नुकसान पर लक्ष्य हासिल कर लिया और मुकाबला अपने नाम किया। यह मैच सनशाइन क्रिकेट अकादमी के कोच हरप्रीत कंबोज, रतिया के कोच संदीप शेखों तथा संजय हमजापुर की उपस्थिति में खेला गया।मैच के समापन अवसर पर रतिया हेल्पिंग हैंड्स वेलफेयर ट्रस्ट के संरक्षक बोबी गोस्वामी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

रतिया। खिलाड़ी को सम्मानित करते अतिथिगण।

किसानों को किया प्राकृतिक खेती के प्रति जागरूक

टोहाना। किसानों को संबोधित करते हुए एसडीओ कृषि विभाग मुकेश मेहला।

टोहाना। गांव डांगरा के किसान सुरेश भडिय़ा के बाबा फूलगिरी प्राकृतिक खेती फॉर्म हाउस पर प्राकृतिक खेती पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में हरियाणा एग्रीकल्चर मैनजेमेंट एवं एक्सटेंशन ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट जींद से कोऑर्डिनेटर डॉ सुभाष चन्द्र विशेष तौर पर पहुंचे और उन्होंने किसानों को प्राकृतिक खेती के बारे में किसानों को जागरूक किया। उन्होंने बताया कि रासायनिक खादों का प्रयोग बहुत ज्यादा हो गया है, जिससे भूमि में पोषक तत्त्वों की कमी होती जा रही है। उन्होंने सुरेश भडिय़ा के खेत मे प्रैक्टिकल जीवामृत घन जीवामृत व प्राकृतिक खेती में काम आने वाले अन्य संसाधनों के बारे में बताया। किसानों को बताया कि आज के समय में प्राकृतिक खेती करनी होगी तभी जमीन उपजाऊ होगी व पेस्टीसाइड के प्रयोग को कम करना होगा। इस मौके पर टोहाना ब्लॉक से कृषि विभाग से एसडीओ डॉ मुकेश महला, डॉ. रामेश्वर, रितु भाटिया, कंचन रानी मौजूद रहे। डॉ. मुकेश मैहला ने किसानों को किसान पहचान पत्र बनवाने का भी आह्वान किया। कार्यक्रम में आसपास के गांवों से 50 से अधिक किसानों ने भाग लिया।

नागरिक अस्पताल का जांचा रिकॉर्ड

हरिभूमि न्यूज ⏭ सिरसा

सीएम विंडो एमिनेंट सदस्यों ने जिला नागरिक अस्पताल में अस्पताल की व्यवस्थाओं का बारीकी से निरीक्षण किया।

■ एमिनेंट सदस्यों ने किया नागरिक अस्पताल का निरीक्षण

निरीक्षण के दौरान अस्पताल की ओपीडी, ट्रामा सेंटर स हि त प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्र का जायजा लिया गया और मरीजों को मिल रही स्वास्थ्य सुविधाओं की स्थिति को बारीकि से परखा। निरीक्षण दल में एडवोकेट कपिल सोनी, सुशील सैनी, सुनील बामनियां तथा पूजा शामिल थे। उन्होंने अस्पताल परिसर में साफ-सफाई, दवाइयों की उपलब्धता और उपचार व्यवस्था को लेकर संबंधित अधिकारियों से जानकारी ली। इस अवसर पर नागरिक अस्पताल के पीएमओ डॉ. पवन कुमार तथा वरिष्ठ फार्मासिस्ट योगेश खन्ना भी मौजूद थे। अधिकारियों ने निरीक्षण दल को अस्पताल में दी जा रही सेवाओं और व्यवस्थाओं के बारे में विस्तार से अवगत कराया। निरीक्षण दल ने मरीजों से भी अस्पताल में मिल रही सुविधाओं को लेकर बातचीत की और उनसे सुझाव लिए।

सिरसा। एमिनेंट सदस्य नागरिक अस्पताल का निरीक्षण करते हुए।

रायपुर ढाणी में 60 लोगों ने रक्तदान किया, सम्मानित

रतिया। सर्व कल्याण मंच की तरफ से गांव रायपुर ढाणी के गुरुद्वारे में ग्रामीणों व नागरिक हस्पताल फतेहाबाद की टीम के सहयोग से स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस रक्तदान शिवर में रतिया के नायब तहसीलदार विचित्रानन्द ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। सर्व कल्याण मंच के ब्लॉक अध्यक्ष सुखेंद्र नहला ने उनका स्वागत किया। नायब तहसीलदार विचित्रानन्द ने कहा कि रक्तदान महादान है। हर व्यक्ति को रक्तदान जरूर करना चाहिए। आपके द्वारा किए गए रक्तदान से किसी जरूरतमंद की जान बचाई जा सकती है। उन्होंने कहा कि रक्तदान करने से शरीर में किसी तरह की कोई कमजोरी नहीं आती। हमारा शरीर अपने आप रक्त पूरा कर लेता है। सर्व कल्याण मंच के ब्लॉक अध्यक्ष सुखेंद्र नहला ने बताया कि मंच द्वारा गरीब बच्चों को जूते, जुराबें, गर्म स्वेटर आदि वितरण के कैंप भी लगाए जाते है। आज के रक्तदान शिविर में 30 यूनिट के लगभग रक्त एकत्रित किया गया। रक्तदान शिविर में फतेहाबाद के सिविल हॉस्पिटल की मेडिकल टीम के सहयोग से रक्तदाताओं की स्वास्थ्य जांच कर सुरक्षित तरीके से रक्त संग्रह किया गया। इस अवसर पर सर्व कल्याण मंच के जिलाध्यक्ष विष्णु विशेष तौर पर मौजूद रहे।

सुरक्षा पुलिस ने लोगों से जनसंपर्क कर संदिग्ध लोगों की जानकारी देने की अपील की

जाखल में पुलिस ने चलाया सर्च अभियान डॉग स्क्वॉड, कमांडो टीम ने खंगाले होटल

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

जाखल क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ करने के उद्देश्य से पुलिस द्वारा शनिवार को सर्च अभियान चलाया गया। इस अभियान में डॉग स्क्वॉड, कमांडो टीम तथा स्थानीय पुलिस बल ने संयुक्त रूप से भाग लेकर क्षेत्र में कानून-व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में प्रभावी कदम उठाए। थाना जाखल प्रभारी उप निरीक्षक सुरेश के नेतृत्व में आयोजित इस सर्च अभियान के दौरान संवेदनशील एवं चिन्हित क्षेत्रों, सार्वजनिक स्थानों, बस स्टैंड, बाजारा, ग्रामीण सपक मागों तथा संदिग्ध ठिकानों पर गहन जांच की गई। अभियान का मुख्य उद्देश्य असामाजिक तत्वों की गतिविधियों पर अंकुश लगाना, संदिग्ध व्यक्तियों की पहचान करना तथा आमजन म सुरक्षा का भावना का और अधिक मजबूत करना रहा।

सर्च अभियान के दौरान डॉग स्क्वॉड की सहायता से विभिन्न स्थानों की बारीकी से तलाशी ली गई, जबकि कमांडो टीम ने रणनीतिक रूप से क्षेत्र में तैनात रहकर हर गतिविधि पर नजर बनाए रखी। स्थानीय पुलिस टीमों द्वारा आने-जाने वाले वाहनों की जांच की गई, संदिग्ध व्यक्तियों से पूछताछ की गई तथा आवश्यकतानुसार दस्तावेजों का सत्यापन किया गया। इस दौरान आम नागरिकों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो, इसका भी विशेष ध्यान रखा गया। अभियान के दौरान पुलिस अधिकारियों ने स्थानीय नागरिकों से संवाद स्थापित कर उन्हें सुरक्षा संबंधी आवश्यक दिशा-निर्देश दिए और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत पुलिस को देने की अपील की। पुलिस ने स्पष्ट किया कि जिले में शांति व्यवस्था भंग करने वाले तत्वों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

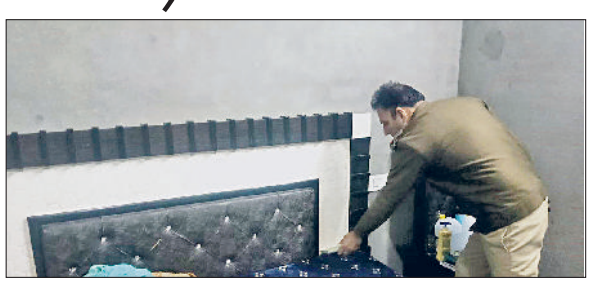

जाखल। सर्च अभियान चलाते पुलिस कर्मचारी।

ये बोले अधिकारी

पुलिस प्रशासन ने यह भी दोहराया कि ऑपरेशन जीवन ज्योति के तहत इस प्रकार के सर्च अभियान आगे भी निरंतर जारी रहेंगे, ताकि अपराध पर प्रभावी नियंत्रण रखा जा सके और आमजन को सुरक्षित वातावरण प्रदान किया जा सके। जिला पुलिस नागरिकों की सुरक्षा के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

बड़ोपल में एनएसएस शिविर का समापन बीईओ ने स्वयंसेवकों को किया जागरूक

किसी भी लक्ष्य को सफलतापूर्वक पाने के लिए समय प्रबंधन जरूरी

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

किसी भी लक्ष्य को सफलतापूर्वक पाने के लिए समय प्रबंधन आवश्यक है। यह बात खंड शिक्षा अधिकारी विजय कुमार ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बड़ोपल में चल रहे सात दिवसीय एनएसएस शिविर के समापन अवसर पर विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कही। इस दौरान स्वयंसेवकों को बाल संरक्षण, पोक्सो एक्ट, पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता, स्वदेशी, विकसित भारत, योग, बेटी पढाओ-बेटी बचाओ, समय प्रबन्धन, यातायात के नियम, जल संरक्षण आदि के बारे में विभिन्न वक्ताओं के माध्यम से जागरुक दिया गया।

विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए बीईओ विजय कुमार ने कहा कि समय प्रबंधन उत्पादकता बढ़ाता है, तनाव कम करता है। लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है तथा जीवन में कार्य का संतुलन बनाता है, जिससे व्यक्ति अपने पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन में अधिक कुशल और प्रभावी बन पाता है। इसके साथ यह आपको कार्यों को प्राथमिकता देने, केंद्रित रहने और समय बर्बाद करने वाली आदतों से बचने में सक्षम बनाता है।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर प्रवक्ता सीमा बंसल, सोनू गढ़वाल, नीलम, सीमा भ्याना, संगीता रानी, सुनीता, रेणू बाला, पूनम रानी, मदन गोपाल आर्य, सतीश शर्मा, अतुल वर्मा, रोशन लाल, जयदेव, सुन्दर सिंह, डॉ. राजेन्द्र गोदारा, रवि कुमार सहित अनेक स्टाफ सदस्य एवं स्वयंसेवक उपस्थित थे।

आवेदन करने वाले 542 विद्यार्थियों में से 431 ने दी परीक्षा

हकृवि के विभिन्न पीएचडी कोर्सों में दाखिले की प्रवेश परीक्षा शांतिपूर्वक संपन्न

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विभिन्न पीएचडी कोर्सिज के लिए आयोजित प्रवेश परीक्षा शांतिपूर्वक व व्यवस्थित ढंग से संपन्न हुई। इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन ने मुख्य परिसर में बने परीक्षा केंद्र पर पुख्ता प्रबंध किए थे। विभिन्न पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए कुल 542 विद्यार्थियों ने आवेदन भरें, जिनमें 431 ने परीक्षा दी। परीक्षा के दौरान प्रत्येक परीक्षार्थी की फोटोग्राफी भी की गई। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने परीक्षा केंद्र का दौरा किया और परीक्षार्थियों की सुविधा तथा परीक्षा के संचालन के लिए की गई व्यवस्थाओं का भी जायजा लिया।

● कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने किया परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण

हिसार। परीक्षा केंद्र का निरीक्षण करते कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज।

कुल 79 प्रतिशत विद्यार्थी पेपर देने आए

कुलसचिव एवं परीक्षा नियंत्रक डॉ. पवन कुमार ने बताया कि उपरोक्त पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए कुल 542 विद्यार्थियों ने आवेदन भरें, जिनमें 431 ने परीक्षा दी। परीक्षा के दौरान प्रत्येक परीक्षार्थी की फोटोग्राफी भी की गई। उन्होंने उम्मीदवारों व उनके अभिभावकों से अपील की है कि वे उपरोक्त पीएचडी कार्यक्रमों में दाखिला संबंधित नवीनतम जानकारियों के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट नियमित रूप से चेक करते रहें।

इन विषयों में होगी प्रतिस्पर्धा

कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने बताया कि शनिवार को जिन पीएचडी कोर्सिज के लिए प्रवेश परीक्षा हुई, उनमें विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स, एग्रीकल्चरल एक्सटेंशन एजुकेशन, एग्रीकल्चर मेटीयोरोलॉजी, एग्रोनॉमी, फ्रूट साइंस, फलोरिकल्चरल एंड लैंडस्केपिंग, जेनेटिक्स एंड प्लांट ब्रीडिंग, नेमोटोलॉजी, इंटोमोलॉजी, सिल्वीकल्चर एंड एग्रोफोरस्ट्री, प्लांट पेथोलॉजी, सीड साइंस एंड टैक्नोलॉजी, सॉयल साइंस, वेजिटेबल साइंस, एग्री-बिजनेस मैनेजमेंट, बिजनेस मैनेजमेंट व रूरल मैनेजमेंट (गुरूग्राम), कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय में सॉयल एंड वाटर कंजरवेशन इंजीनियरिंग, फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग व रिन्युएबल एनर्जी इंजीनियरिंग, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय में एपिरेल एंड टेक्सटाइल साइंस, एक्सटेंशन एजुकेशन एंड कम्युनिकेशन मैनेजमेंट, फूड्स एंड न्यूट्रीशन, ह्यूमन डेवेलपमेंट एंड फैमिली स्ट्डीज व रिसोर्स मैनेजमेंट एंड कंज्यूमर साइंस, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में केमिस्ट्री, बायोकेमस्ट्री, इनवायरमेंटल साइंस, माइक्रोबायोलॉजी, फिजिक्स, प्लांट फिजियोलॉजी, सोशियोलॉजी, स्टेटिक्स, जुलोजी, व फूड साइंस एंड टेक्नोलॉजी, मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय में एक्वाकल्चर आदि विषय शामिल हैं।

लितानी के शिव मंदिर में हुआ जलाभिषेक

उकलाना। सोमनाथ मंदिर की हजार वर्षों से चली आ रही गौरवशाली परंपरा और उसके पुनर्निर्माण के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा इस वर्ष "सोमनाथ स्वाभिमान पर्व" श्रद्धा और आस्था के साथ मनाया जा रहा है। इसी कड़ी में गांव लितानी स्थित प्राचीन शिव मंदिर में विधिवत जलाभिषेक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत मंदिर परिसर में वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ हुई, जहां पुजारियों द्वारा भगवान शिव का जलाभिषेक कर देश, प्रदेश और समाज की सुख-समृद्धि की कामना की गई। इस अवसर पर भाजपा के जिला उपाध्यक्ष रामफल नैन, सुमित लितानी, डॉ. राजेश, डॉ. जग महेंद्र, सतबीर गोयल, दयानंद, सोनू वर्मा, रामफल मुवाल नंबरदार, सतेश सहारण, पंडित राजेन्द्र शर्मा, पंडित संजय शास्त्री आदि उपस्थित रहे।

शिवलिंग पर जलाभिषेक करते श्रद्धालु।

खबर संक्षेप

हिसार। चालकों को जागरूक करते यातायात पुलिस कर्मचारी।

टैक्सी व ट्रक यूनियन में किया जागरूक

हिसार। सड़क सुरक्षा माह 2026 के तहत ट्रैफिक पुलिस की ओर से टैक्सी यूनियन एवं ट्रक यूनियन के चालकों के लिए विशेष जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य व्यवसायिक वाहनों के चालकों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक करना तथा सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाना रहा। कार्यक्रम के दौरान ट्रैफिक पुलिस से एएसआई कमल सिंह ने चालकों को यातायात नियमों की विस्तार से जानकारी दी। उन्हें वाहन चलाते समय हेलमेट व सीट बेल्ट का अनिवार्य रूप से प्रयोग करने, निर्धारित गति सीमा में वाहन चलाने, नशे की अवस्था में वाहन न चलाने, ओवरलोडिंग व खतरनाक ओवरटेकिंग से बचने तथा वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग न करने के बारे में विस्तारपूर्वक समझाया गया।

भ्रष्टाचार से जन स्वास्थ्य खतरे में : इंदल

हिसार। नलवा विधानसभा से पूर्व प्रत्याशी एडवोकेट बजरंग इंदल ने कहा है कि हिसार जिले सहित पूरे हरियाणा में जर्जर पेयजल पाइपलाइनों के कारण घरों में सीवर का दूषित पानी पहुंच रहा है जिससे जन स्वास्थ्य गंभीर खतरे में है। पानी की गुणवत्ता का टीडीएस स्तर 500 के सामान्य मानक को पार कर कई क्षेत्रों में 1500 तक जा पहुंचा है जो भारतीय मानक ब्यूरो के मानकों के अनुसार जानलेवा है। हिसार शहर की एक तिहाई से अधिक कॉलोनियों में 30 से 40 साल पुरानी पाइपलाइनें हैं।

एडवोकेट बजरंग इंदल।

तरसेम नगर में ठंड के प्रभाव से एक की मौत

हिसार। तरसेम नगर में ठंड के प्रभाव से एक व्यक्ति की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि लगभग 53 वर्षीय दुर्गेश किसी ढाबे पर काम करता था। इस दौरान वह ठंड की चपेट में आकर बीमार पड़ गया और उसकी मौत हो गई। पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया।

राजकीय महाविद्यालय में 80 साल से अधिक उम्र के पूर्व छात्र और रिटायर्ड शिक्षक दिखे एक साथ

एलुमनी मीट में पूर्व छात्रों ने खोला यादों का पिटारा

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

गुरु गोरखनाथ राजकीय महाविद्यालय में शनिवार को कॉलेज की स्थापना के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में भव्य डायमंड जुबली समारोह का आयोजन किया गया। इस मौके पर वर्ष 1950 से 2020 की पूर्व छात्र कॉलेज से जुड़ी अपनी पुरानी यादों को ताजा करने पहुंचे। पूर्व छात्र मिलन समारोह में कई दशकों पुराने दोस्तों से मिलकर पूर्व छात्र भावुक हो गए। एलुमनी मीट में 80 साल से अधिक के पूर्व छात्र तथा रिटायर्ड शिक्षक भी पहुंचे और उन्होंने कॉलेज के दिनों की मस्ती, पढ़ाई, शिक्षकों और यादगार किस्सों की यादें ताजा की। छात्रों ने अनुभव साझा करते हुए कहा कि कॉलेज का वातावरण, शिक्षकों का मार्गदर्शन और यहां प्राप्त शिक्षा ने उनके कॅरिअर को नई दिशा दी। समारोह में कॉलेज के विभिन्न बैचों से करीब 1100 से अधिक पूर्व छात्र-छात्राएं शामिल हुए। कार्यक्रम में कॉलेज के ही पूर्व में छात्र रहे सीजेआई न्यायमूर्ति सूर्यकांत को बतौर मुख्य अतिथि पहुंचने था, लेकिन किसी कारणवश वे नहीं पहुंच पाए। पूर्व छात्रों में वरिष्ठ आईएएस गीता भारती, रिटायर्ड आईएएस सुरीना राजन, एचसीएस सुरेंद्र सिंह दुहन, एचसीएस सुमन, मुख्य सूचना आयुक्त अमरजीत सिंह, गुरुग्राम नगर निगम के संयुक्त जयदीप सिंह, फिल्म निर्देशक गुलशन सचदेवा, पूर्व कुलपति डॉ. श्रीकांत शर्मा, अजय सिंह चौटाला, पूर्व मंत्री सुभाष गोयल, छत्रपाल सिंह, एडवोकेट एमएस आनंद प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। समारोह में पूर्व छात्र एसोसिएशन के अध्यक्ष एवं रिटायर्ड प्रिंसिपल जीआर गोदारा ने एसोसिएशन के कार्य पर प्रकाश डाला।

● कई दशकों पुराने दोस्तों से मिलकर पूर्व छात्र हुए भावुक

● गुरु गोरखनाथ राजकीय महाविद्यालय में एलुमनी मीट आयोजित

हिसार। एलुमनी मीट में प्रसन्नचित मुद्रा में पूर्व छात्र। फोटो: हरिभूमि

हिसार। एलुमनी मीट में मंच पर मौजूद 80 वर्ष से अधिक के पूर्व छात्र।

हिसार। एलुमनी मीट में उपस्थित पूर्व छात्र व अन्य। फोटो: हरिभूमि

संस्थान की असली पहचान एलुमनाई

कार्यक्रम के समापन पर कॉलेज प्राचार्य डॉ. विवेक सैनी ने पूर्व छात्रों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि किसी भी संस्थान की असली पहचान उसके एलुमनाई होते हैं। डॉ. सैनी ने बताया कि ऐसे आयोजन न केवल पुराने संबंधों को मजबूत करते हैं बल्कि वर्तमान विद्यार्थियों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनते हैं। पूर्व छात्रों ने कॉलेज प्रशासन का धन्यवाद करते हुए उम्मीद जताई कि भविष्य में भी ऐसे आयोजन जारी रहेंगे, ताकि पुराने विद्यार्थियों और संस्थान के बीच यह जुड़ाव बना।

पूर्व छात्रों में दिखा उत्साह

एलुमनी मीट को लेकर पूर्व छात्रों में भारी उत्साह देखने को मिला। शनिवार की सुबह से ही पूर्व छात्र कॉलेज परिसर में पहुंचना शुरू हो गए थे। समारोह में 1950 से 2020 तक के विभिन्न बैचों के सैकड़ों पूर्व छात्र और सेवानिवृत्त शिक्षक शामिल हुए। समारोह के सुचारू संचालन के लिए कॉलेज प्रशासन ने कुल 33 विभिन्न समितियों का गठन किया था। कॉलेज प्रशासन की ओर से पूर्व छात्रों और रिटायर्ड शिक्षकों के लिए विशेष पंजीकरण काउंटर बनाए गए थे, जहां सभी ने विधिवत पंजीकरण करवाया। पंजीकरण के दौरान कॉलेज की ओर से एलुमनी किट वितरित की गई और सभी के पहचान पत्र भी बनाए गए। पूर्व छात्रों तथा सेवानिवृत्त शिक्षकों को कॉलेज परिसर में प्रवेश के दौरान तिलक लगाकर स्वागत किया गया। पूरे कॉलेज परिसर को फूलों और सजावटी सामग्री से आकर्षक रूप से सजाया गया था। कॉलेज की ओर से विशेष सेल्फी प्वाइंट भी बनाया गया।

75 वर्ष की स्मृतियों पर डॉक्यूमेंट्री

समारोह में पूर्व छात्रों के लिए एक विशेष डॉक्यूमेंट्री भी तैयार की गई थी। यह डॉक्यूमेंटी कॉलेज के ही पूर्व छात्र एवं फिल्म निर्देशक गुलशन सचदेवा द्वारा तैयार की गई थी। इसमें कॉलेज के 75 वर्षों की स्मृतियां, उपलब्धियां और सम्मानजनक क्षणों को बड़े शानदार ढंग से प्रस्तुत किया गया था। समारोह में 80 साल से अधिक आयु के पूर्व छात्रों व सेवानिवृत शिक्षकों विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

पूर्व विद्यार्थियों की विशेष डायरेक्टरी का विमोचन

एलुमनी मीट के कॉलेज से वर्ष 1950 से 2020 तक शिक्षा प्राप्त कर चुके लगभग 3000 पूर्व विद्यार्थियों की एक विशेष डायरेक्टरी का विमोचन भी किया गया। डायरेक्टरी में पूर्व छात्रों की शैक्षणिक, प्रशासनिक और व्यावसायिक उपलब्धियों का विस्तृत विवरण शामिल है।

हिसार। मंच पर कॉलेज से जुड़ी पुरानी यादों को साझा करते पूर्व छात्र, साथ में कॉलेज के शिक्षक। फोटो: हरिभूमि

फोटो प्रदर्शनी लगाई

कॉलेज के 75 वर्षों की ऐतिहासिक यात्रा को दर्शाने वाली एक फोटो प्रदर्शनी भी लगाई गई। प्रदर्शनी में लगभग 3000 दुर्लभ तस्वीरें प्रदर्शित की गईं, जिनमें कॉलेज के पुराने भवन, शैक्षणिक व सांस्कृतिक गतिविधियां, उपलब्धियां और विभिन्न सम्मान शामिल थे। पूर्व छात्र प्रदर्शनी में अपने फोटो देख पुरानी यादों में खो गए।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने मन मोहा

एलुमनी मीट में मनोरंजक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी आयोजित की गईं। इनमें सभी ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। पूरे कार्यक्रम के दौरान पुरानी यादें ताजा होती रहीं और हंसी-खुशी का माहौल बना रहा। कॉलेज कैंपस गीत-संगीत, शेरो-शायरी और पुरानी यादों के किस्सों से गूंज उठा। बरसों बाद मिले दोस्तों के चेहरों पर खुशी साफ झलक रही थी।

हिंदी भाषा देशभक्ति, संस्कृति और समृद्धि की प्रतीकः प्रधान

हिसार। भिवानी रोहिल्ला स्थित महारानी लक्ष्मीबाई कॉलेज में शनिवार को अंतरराष्ट्रीय हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय की साहित्यिक सोसायटी की ओर से पोस्टर मेकिंग व स्लोगन लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। महाविद्यालय चेयरमैन भारत भूषण प्रधान ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी भाषा देशभक्ति, संस्कृति, और समृद्धि का प्रतीक है। हिंदी हमारे संविधान की अधिकारिक भाषा है। महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. शमीम शर्मा ने कहा कि हिंदी हमारी राष्ट्रीय भाषा के रूप में महत्वपूर्ण है। इसलिए इस अवसर पर, हमें अपनी मातृभाषा के प्रति समर्पित रहना चाहिए। साहित्यिक सोसायटी की प्रभारी श्रीमती ज्योति वर्मा ने कहा कि हिंदी भाषा, भारत की एकता और विविधता का प्रतीक है।

■ महारानी लक्ष्मीबाई कॉलेज में मनाया अंतरराष्ट्रीय हिंदी दिवस

भाकपा ने मनाया 100वां स्थापना दिवस

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा) का 100वां स्थापना दिवस शनिवार को प्रेम नगर स्थित कुम्हार धर्मशाला में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता का. नंदलाल तंवर ने की तथा संचालन जिला सचिव का. रूप सिंह ने किया।

कार्यक्रम में 26 दिसंबर 1925 को उत्तर प्रदेश के कानपुर में गठित की गई भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना में अग्रणी भूमिका निभाने वाले कामरेड मौलाना हसरत मोहानी, एसए डांग, एसबी घाटे, गंगाधर अधिकारी, का. मिराजकर आदि को याद करते हुए उनको भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

देश के निर्माण में कम्युनिस्टों की अहम भूमिकाः सहगल

हिसार। भाकपा के स्थापना दिवस पर ध्वजारोहण करते पार्टी पदाधिकारी।

मिली थी ऐतिहासिक जीत

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ नेता एमएल सहगल ने बताया कि 1947 में देश को आजादी मिलने के बाद 1952, 1957 व 1962 के आम चुनावों में भाकपा को ऐतिहासिक जीत मिली, जिसमें भाकपा लोकसभा में दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। कम्युनिस्टों के बलिदानों को याद करते हुए उन्होंने कहा कि कम्युनिस्टों ने स्वतंत्र भारत में पब्लिक सर्विस सेक्टर का गठन करके विकसित भारत के निर्माण और युवाओं को रोजगार देने में अहम भूमिका निभाई। इस अवसर पर भाकपा के वरिष्ठ नेता कामरेड सतपाल डांग, सेवानिवृत तहसीलदार नरेश गोयल, सुनील मैडल, चंद्रभान माटा, रामप्रकाश, जरनैल सिंह, प्रताप सिंह, सुभाष शर्मा, विजय जांगड़ा, रामेश्वरदास हरिकोट, हनुमान सिंह, शमशेर सिंह व रणजीत सिंह राजथल आदि भी मौजूद रहे।

युवा दिवस पर 12 को होगी स्वदेशी संकल्प दौड़

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

स्वदेशी विचारधारा जन-जन तक पहुंचाने के लिए स्वदेशी जागरण मंच 12 जनवरी को स्वामी विवेकानंद जयंती पर स्वदेशी संकल्प दौड़ का आयोजन करेगा। लुवास में प्रातः 8 बजे और हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कुलपति सचिवालय से प्रातः 9 बजे यह दौड़ शुरू होगी। दिल्ली बाईपास पर स्थित गवर्नमेंट गर्ल्स कॉलेज में प्रातः 11 बजे और ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी में दोपहर 3 बजे स्वदेशी संकल्प दौड़ शुरू होगी। हकृवि के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में प्रातः 10 बजे स्वदेशी आधारित विचार गोष्ठी और इसी महाविद्यालय के सभागार में प्रातः 11 बजे प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। इसी भांति लुवास व एफसी कॉलेज में भी 12 जनवरी को ही कार्यक्रम व प्रतियोगिता आयोजित किए जाएंगे।

200 कार्यक्रम होंगे

स्वदेशी मेला प्रांतीय प्रमुख अनिल गोयल ने बताया कि हिसार जिले के विभिन्न स्थानों पर 12 से 23 जनवरी तक स्वदेशी आधारित 200 कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इन आयोजनों में पतंजलि योगपीठ, सुभाष चंद्रा फाउंडेशन, नेहरू युवा केंद्र, एनएसएस, एनसीसी, हिसार के सभी विश्वविद्यालयों व अन्य शिक्षण संस्थानों का विशेष सहयोग रहेगा। विद्यालयों, महाविद्यालयों विश्वविद्यालयों सहित आईटीआई व पॉलिटेक्निक में कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

लुवास में पांच दिवसीय किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

गांवों में प्रत्येक परिवार को कम से कम एक पशु अवश्य पालना चाहिए

कुलपति प्रो. डॉ. विनोद कुमार वर्मा ने किसानों का किया आह्वान

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (लुवास) के कॉलेज ऑफ डेयरी साइंस एंड टेक्नोलॉजी द्वारा अनुसूचित जाति वर्ग के किसानों के लिए 'मूल्य संवर्धित दुग्ध उत्पादों' विषय पर आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हुआ। समापन अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. विनोद कुमार वर्मा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कुलपति प्रो. डॉ. विनोद कुमार वर्मा ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्येक परिवार को कम से कम एक पशु अवश्य पालना चाहिए। इससे न केवल दूध की नियमित उपलब्धता होती है, बल्कि व्यक्ति के जीवन में अनुशासन और सकारात्मक दिनचर्या भी विकसित होती है। उन्होंने कहा कि दूध एक संपूर्ण आहार है तथा इससे तैयार किए जाने वाले मूल्य संवर्धित दुग्ध उत्पाद किसानों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। कुलपति ने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान किसानों को पनीर, बर्फी, खजूर बर्फी, अंजीर बर्फी, कुल्फी, रसगुल्ला एवं चीज़ जैसे विभिन्न मूल्य संवर्धित दुग्ध उत्पादों के निर्माण की वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक जानकारी प्रदान की गई। पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. शरणगौड़ा बी. पाटिल ने प्रशिक्षण की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ. एसएस ढाका, पशु चिकित्सा महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. मनोज रोज, अनुसंधान निदेशक डॉ. नरेश जिंदल, निदेशक आईपीवीएस डॉ. पवन, डॉ. सोनिया सिंधु, डॉ. गौतम, विकास खर्ब आदि उपस्थित रहे।

हिसार। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधिता करते कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा।

श्रीराम के वनवास की कथा सुनाई

■ श्री सनातन धर्म हनुमान मंदिर में आयोजित श्री राम कथा का छठा दिवस म

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

श्री सनातन धर्म हनुमान मंदिर, नगोरी गेट में आयोजित नवदिवसीय श्री राम कथा के छठे दिवस में वन गमन की भावपूर्ण कथा का अत्यंत मार्मिक एवं प्रेरणादायी वर्णन किया गया। कथा व्यास पंडित शशिशेखर महाराज ने अपने ओजस्वी एवं भावप्रवण श्रीमुख से भगवान श्रीराम के वनवास प्रसंग का ऐसा सजीव चित्रण किया कि पूरा कथा पंडाल भक्तिरस से सराबोर हो गया।

हिसार। श्री राम कथा का रसपान करवाते हुए पंडित शशिशेखर महाराज।

त्याग, मर्यादा और आज्ञा पालन का सर्वोच्च आदर्श

कथा के दौरान पंडित श्री शशिशेखर महाराज ने बताया कि जब माता कैकेयी के वरदान के कारण भगवान श्रीराम को 14 वर्षों का वनवास मिला, तब श्रीराम ने उसे राजाज्ञा नहीं बल्कि पिता की आज्ञा मानकर सहर्ष स्वीकार किया। महाराज जी ने कहा कि श्रीराम का चरित्र त्याग, मर्यादा और आज्ञा पालन का सर्वोच्च आदर्श है, जो आज के समाज को भी सत्य और कर्तव्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। वन गमन प्रसंग में माता सीता का पति धर्म का पालन करते हुए वन जाने का निश्चय, लक्ष्मण का भ्रातृ प्रेम और माता कौशल्या व अयोध्यावासियों का करुण विलाप इन सभी दृश्यों का वर्णन सुनकर श्रोता भावविभोर हो गए। कथा पूजन राजेश बंसल एवं सुधा बंसल, रोहित गोयल व संगीता सिंघल द्वारा सपरिवार करवाया गया। छठे दिन की कथा में मुख्य रूप से सी.डी.गर्ग, पवन, डॉ. पवन गोयल, ईश्वर बिंदल, सुभाष अहमदाबाद, हकीकत गोयल, चंदा अग्रवाल, सीता गर्ग, अनिल कुमार, कुलदीप गोवर, बबिता गुप्ता, आशा रानी उपस्थित थे।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 11 जनवरी 2026

पिछला साल भारतीय कला, साहित्य व संस्कृति के लिए बहुत महत्वपूर्ण और उत्साहवर्धक रहा। साल के शुरुआत में यूनेस्को ने भारत के दो प्राचीन ग्रंथों 'श्रीमद्भगवद्गीता' और 'नाट्यशास्त्र' को मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया, जोकि भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को वैश्विक पहचान व मान्यता देता है। वहीं साल के अंतिम महीने में यूनेस्को ने भारत के प्रमुख पर्व दीपावली को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में शामिल किया। ये उपलब्धियां भारत की कला, आध्यात्मिक व सांस्कृतिक विरासत को विश्व में एक विशेष स्थान व मान्यता प्रदान करती हैं। कला-संस्कृति से जुड़े दिग्गज, बता रहे हैं वे इस उपलब्धि को किस तरह देखते हैं?

भारतीय सांस्कृतिक विरासत को मिली वैश्विक पहचान

ये उपलब्धियां हासिल होना हर भारतीय के लिए गौरव का पल है

पद्मश्री डॉ. भरत गुप्त
कार्यकारी उपाध्यक्ष-एनएसडी

'श्रीमद्भगवद्गीता' व 'नाट्यशास्त्र' को यूनेस्को द्वारा मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया जाना, हर भारतीय के लिए गौरव का पल है। 'श्रीमद्भगवद्गीता' एक प्राचीन ग्रंथ है, जिसे सदियों से खूब पढ़ा जा रहा है। 'नाट्यशास्त्र' को लेकर मुझे विशेष प्रसन्नता है, क्योंकि पश्चिम के लोग अभी भी इस बात को नहीं जानते कि 'नाट्यशास्त्र' रंगमंच की व्याख्या है और इतनी व्यापक व्याख्या और कहीं नहीं है। बेशक कुछ पश्चिम के लोग नाट्यशास्त्र के विषय में जानते हैं लेकिन अब और विदेशी इसे पढ़ेंगे। दोनों ग्रंथों को मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में रखवाने में आईजीएनसीए की बड़ी भूमिका रही। मैं आईजीएनसीए में ट्रस्टी हूं, हमारी पूरी टीम इस काम में लगी थी।

'श्रीमद्भगवद्गीता' दर्शन का ग्रंथ है, जिसमें कर्म, योग, ज्ञान और भक्ति की व्याख्या है। जीवन में क्या करना है, जीवन कैसे, किन मूल्य को लेकर जीना है, आप कैसे कर्म करेंगे? यह हमें गीता सिखाती है। इस तरह 'श्रीमद्भगवद्गीता' एक योद्धा की किताब है। उस योद्धा की मानसिकता की मनोदशा, हम सभी की जिंदगी में कभी न कभी किसी न किसी रूप में आती रहती है। गीता हमें सिखाती है कि श्रेष्ठ जीवन कैसा हो? जीवन जैसा भी है, अच्छा, बुरा, कुछ ऊंचे पात्र, कुछ नीचे, नायक, खलनायक इन सबको दिखाने वाला ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' है। गीता के संदेश को हम बच्चे से लेकर बुजुर्गों तक नाटक के माध्यम से पहुंचा सकते हैं। इन ग्रंथों को जनता तक पहुंचाना बहुत जरूरी है।

दीपावली के संदर्भ में यही कहूंगा कि यूनेस्को ने इसे सांस्कृतिक धरोहर माना है। यह गर्व की बात है लेकिन अब हमें देखना होगा कि क्या हम दीपावली को उसके मूल स्वरूप में मना रहे हैं? साथ ही विजया दशमी के महत्व को समझें, तभी दीपावली का सही अर्थ समझ आएगा। *

भारतवासियों के लिए विश्वस्तर की यह बड़ी उपलब्धि है

रोहित त्रिपाठी अभिनेता-निर्देशक, अध्यक्ष-अपस्टेज आर्ट ग्रुप

नाट्यशास्त्र को यूनेस्को मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल करना दर्शाता है कि हमारा नाट्यशास्त्र प्राचीन नाट्यमंच पद्धति है। पूरे विश्व में यह स्वीकारोक्ति हुई है कि नाट्यशास्त्र वह ग्रंथ है, जिसमें हमें मंच पर प्रस्तुत करने की सारी विधाएं प्राचीन काल से बताई गई हैं। इसे अब यानी लंबे इंतजार के बाद वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया गया, जबकि यह काम बहुत पहले हो जाना चाहिए था। विश्व की यह स्वीकारोक्ति हमें बताती है कि विश्व के जितने भी महान रंगकर्मी हुए, उन्होंने कहीं न कहीं हमारे नाट्यशास्त्र से गहन अध्ययन किया और अपनी एक थ्योरी बनाकर प्रकाशित की। यह बहुत खुशी की बात है कि अभी हाल ही में दीपावली को अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में शामिल किया गया। इससे प्रतीत होता है कि हमारी सनातन परंपरा और उसके उत्सव विश्व को आगे ले जाने में कितनी मदद करते हैं। यह हम रंगकर्मियों के लिए भारतवासियों के लिए विश्वस्तर की एक बड़ी उपलब्धि है। स्वामी विवेकानंद ने इसीलिए कहा था कि समस्त विश्व के लोग हमारे भाई-बहन हैं। हम विश्व के कल्याण के लिए काम करते हैं। यह हम सभी रंगकर्मियों के लिए गर्व की बात है कि हमारे पास नाट्यशास्त्र है। बस उसे सरलतम बनाकर प्रस्तुत करने के लिए हमारे देश के विद्वानों को आगे आना चाहिए ताकि हर रंगकर्मी तक वह उनकी सरल भाषा में पहुंच सके। वे उसे समझकर अपना ज्ञानवर्धन कर सकें। *

{ आवरण कथा }

यह देश के लिए सांस्कृतिक पुनर्जागरण का ऐतिहासिक क्षण है

डॉ. संध्या पुरेचा अध्यक्ष-संगीत नाटक अकादमी

यूनेस्को द्वारा प्राचीन ग्रंथों 'नाट्यशास्त्र' और 'श्रीमद्भगवद्गीता' का पंजीकरण तथा दीपावली का भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में घोषित होना, भारत के लिए अत्यंत गौरव, आत्म-सम्मान के साथ ही सांस्कृतिक पुनर्जागरण का ऐतिहासिक क्षण है। यह केवल अंतरराष्ट्रीय मान्यता नहीं बल्कि भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा, दार्शनिक दृष्टि और जीवन मूल्यों की वैश्विक स्वीकृति है।

'नाट्यशास्त्र' भारतीय कलाओं की आत्मा है। यह रंगमंच, नृत्य और संगीत का शास्त्र होने के साथ-साथ मानव भावनाओं, रस अभिव्यक्ति और सौंदर्यबोध का वैज्ञानिक और सार्वकालिक ग्रंथ है। वहीं 'श्रीमद्भगवद्गीता' कर्म, धर्म, भक्ति और ज्ञान के माध्यम से मानव जीवन के लिए एक सार्वभौमिक दर्शन प्रस्तुत करती है। इन दोनों ग्रंथों को यूनेस्को में स्थान मिलना यह सिद्ध करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा आज भी संपूर्ण मानवता के लिए प्रासंगिक और मार्गदर्शक है। दीपावली का अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता पाना भारत की लोक-आस्थाओं और सांस्कृतिक चेतना की वैश्विक स्वीकृति है। यह पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि सामाजिक एकता, नैतिक मूल्यों, आशा और सद्भाव का उत्सव है, जो संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बांधता है और मानवता को सकारात्मक ऊर्जा का संदेश देता है। इन उपलब्धियों का भारत की सांस्कृतिक कूटनीति, कला, शिक्षा, अनुसंधान, पर्यटन तथा परंपरागत ज्ञान के संरक्षण और संवर्धन पर दूरगामी प्रभाव होगा। इससे हमारी युवा पीढ़ी अपनी जड़ों से जुड़ने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के वैश्विक महत्व को भी समझ सकेगी। संगीत नाटक अकादमी भी इस दिशा में सतत प्रयास करेगी कि हमारी परंपराएं जीवंत बनी रहें, अगली पीढ़ियों तक पहुंचे और वैश्विक मंच पर गरिमापूर्ण ढंग से प्रस्तुत हों। *

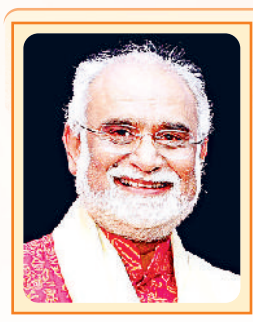

हम सांस्कृतिक पुनर्जागरण का युग देख रहे हैं

डॉ. सच्चिदानंद जोशी सदस्य सचिव-इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र

हम सांस्कृतिक पुनर्जागरण का युग देख रहे हैं। स्वतंत्रता से पूर्व हम गुलाम मानसिकता में जीते रहे इसलिए हमें हमारी सांस्कृतिक विरासत व वैभव का अहसास नहीं हुआ। हमारी अस्मिता बोध को जगाने का काम इस समय हो रहा है। यह निरंतर प्रक्रिया चल रही है। विरासत भी विकास भी, का मंत्र लेकर हम आगे बढ़ रहे हैं। इस दृष्टि से देखें तो पिछला एक साल उसी निरंतर किए जा रहे कार्यों का गौरवशाली साल रहा। पहले हमने 'नाट्यशास्त्र' व 'श्रीमद्भगवदगीता' को यूनेस्को मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में दर्ज कराया। यह इस बात को रेखांकित करता है कि हमारी परंपराएं कितनी पुरानी हैं, हमारी सांस्कृतिक जड़ें कितनी गहरी हैं। श्रीमद्भगवद्गीता को काफी पहले से ही विश्वभर में बहुत आदर, सम्मान के साथ पढ़ा जाता रहा है। अब जब हमारा नाट्यशास्त्र वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल होता है तो हमें पूरे विश्व को यह बताने का अवसर मिलता है कि ऐसा शास्त्र हमारे यहां दो हजार साल पूर्व लिखा गया। तब जबकि विश्व की अधिकांश सभ्यताएं इस पूरे शास्त्र के बारे में जानती भी नहीं थीं। इस दृष्टि से यह बहुत महत्वपूर्ण है। दीपावली का अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर में शामिल होना, हमें विश्व को यह बताने का अवसर देता है कि हमारे देश में पर्व मनाने की निरंतरता कितनी बड़ी है। साथ ही यह भी कि हमारे पर्व किस तरह से सर्वसमावेशी हैं। हमने किस तरह अपनी पुरातन परंपराओं को मान्यताओं को बचाकर रखा है और आगे तक बचाने का संकल्प किया है। इस तरह विश्वस्तर पर ये तीनों उपलब्धियां हमारे लिए बहुत मायने रखती हैं। *

प्रस्तुतिः रेनू खंतवाल

विशेषः राष्ट्रीय युवा दिवस, 12 जनवरी

स्वामी विवेकानंद ने न केवल भारत की सांस्कृतिक श्रेष्ठता को संपूर्ण विश्व में प्रतिष्ठित किया, यहां की धार्मिक चेतना का पुनर्जागरण करने में भी भूमिका निभाई। यही नहीं लगभग सवा सदी से अधिक समय गुजरने के बाद भी स्वामी विवेकानंद, देश के युवाओं के लिए आदर्श और अद्वितीय मार्गदर्शक बने हुए हैं।

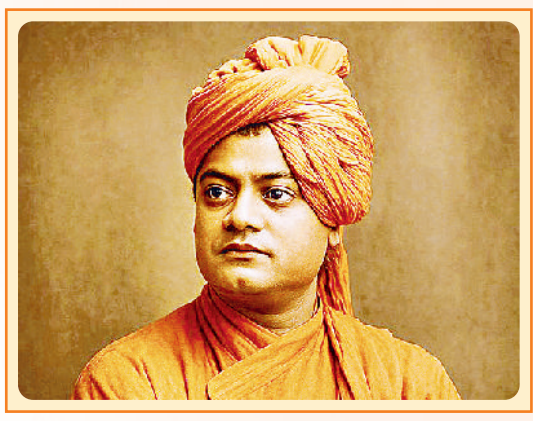

स्वामी विवेकानंद आज भी हैं युवाओं के आदर्श-मार्गदर्शक

{ प्रेरक व्यक्तित्व }
शिखर चंद जैन

ब्रिटिश शासनकाल के समय पश्चिमी देश, भारत की उपेक्षा किया करते थे। दरअसल, वे हमारे देश की अद्वितीय सनातन संस्कृति और गौरवमयी सभ्यता से परिचित ही नहीं थे। ऐसे समय में 12 जनवरी 1863 को जन्मे स्वामी विवेकानंद (बचपन का नाम नरेंद्र) ने युवावस्था में ही दुनिया में भारतवर्ष का मान बढ़ाने में अभूतपूर्व भूमिका निभाई।

भारतीय संस्कृति को दिलाया मानः स्वामी विवेकानंद, भारत के पहले युवा संत थे, जिन्होंने सनातन धर्म का संदेश विश्व भर में फैलाया और इसकी महत्ता पूरे विश्व को समझाई। उन्होंने विश्व में सनातन मूल्यों, धर्म और भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता को स्थापित किया और इसका मान बढ़ाया। 11 सितंबर, 1893 को अमेरिका स्थित शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद में उनके भाषण ने दुनिया भर के धार्मिक और आध्यात्मिक संतों पर एक अमिट छाप छोड़ी। उन्होंने अपने उद्बोधन की शुरुआत जब 'मेरे प्यारे अमेरिकी बहनों और भाइयों' से की तो पूरा हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। इस पर उन्होंने कहा, 'जिस गर्मजोशी और सौहार्दपूर्ण माहौल में मेरा स्वागत किया है, उससे मेरा हृदय गद-गद है। भारत भूमि के सभी समुदायों, वर्गों, लाखों-करोड़ों भारतीयों की तरफ से मैं आपको कोटि-कोटि धन्यवाद देता हूं।' उन्होंने यह भी कहा, 'मुझे उस धर्म व राष्ट्र से संबंध रखने पर गर्व है, जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिकता का पाठ सिखाया। हम न केवल सार्वभौमिक सहनशीलता में विश्वास रखते हैं बल्कि सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं। मुझे भारतीय होने पर गर्व है, जिसने विभिन्न राष्ट्रों के पीड़ितों और शरणार्थियों को आश्रय दिया है।'

धार्मिक सहिष्णुता के पक्षधरः भारतीय संस्कृति के मूल भाव धर्मनिरपेक्षता को वे बहुत महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने सदैव सार्वजनिक संस्कृति के रूप में धार्मिक सहिष्णुता का समर्थन किया, क्योंकि वे सद्भाव और शांति के पक्षधर थे। स्वामीजी, जाति या धर्म के आधार पर बिना किसी भेदभाव के लोगों की सेवा करने को सर्वश्रेष्ठ मानव धर्म मानते थे। उनके विचारों में धर्मनिरपेक्षता के संबंध में तुष्टिकरण के लिए कोई स्थान नहीं था। 1893 में विश्व धर्म संसद में ऐतिहासिक व्याख्यान देने के बाद उन्होंने यूरोप का भी दौरा किया। स्वामी विवेकानंद ने देश की महान आध्यात्मिक विरासत को आगे बढ़ाते हुए एकता की भावना को प्रसारित किया।

मातृभूमि के प्रति अगाध श्रद्धाः स्वामीजी जब अमेरिका और ब्रिटेन की यात्रा कर चार साल बाद भारत लौटे तो उन्होंने यहां की पवित्र भूमि को साष्टांग दंडवत कर नमन किया। उनके मन में मातृभूमि के प्रति अपार श्रद्धा और प्रेम था। वे कहते थे कि मातृभूमि का कण-कण पवित्र और प्रेरक होता है, इसलिए इस धूलि में रमा हुआ हूं।

परम विद्वान-विनम्र व्यक्तित्वः स्वामी विवेकानंद के बारे में नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने लिखा है, 'स्वामीजी इसलिए महान हैं कि उन्होंने पूर्व और पश्चिम, धर्म और विज्ञान, अतीत और वर्तमान में सामंजस्य स्थापित किया, देशवासियों ने उनकी शिक्षाओं से अभूतपूर्व आत्म-सम्मान, आत्मनिर्भरता और आत्म-विश्वास आत्मसात किया है।' इसी ऐतिहासिक संबोधन से प्रभावित होकर प्रख्यात ब्रिटिश इतिहासकार ए.एल. बाशम ने कहा था, 'स्वामी विवेकानंद जी को भविष्य में आधुनिक दुनिया के प्रमुख निर्माता के रूप में हमेशा याद किया जाएगा।'

युवाओं के प्रेरणास्रोतः स्वामी विवेकानंद मानते थे कि युवाशक्ति ही देश, समाज और दुनिया को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ा सकती है। उन्होंने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा था 'उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए।' वे युवाओं से भरपूर आशा और उम्मीद रखते थे। उनके लिए युवा पीढ़ी ही परिवर्तन की अग्रदूत हो सकती है। वे चाहते थे कि युवाओं में विशाल हृदय के साथ मातृभूमि और जनता की सेवा करने की दृढ़ इच्छा शक्ति हो। वे युवाओं का आह्वान करते हुए कहते थे, 'देश में जहां भी प्लेग या अकाल का प्रकोप है, या जहां भी लोग संकट में हैं, आप वहां जाएं और उनके दुःखों को दूर करें। आप पर देश के भविष्य की उम्मीदें टिकी हुई हैं।'

स्वामी विवेकानंद, आधुनिक भारत के उन महानतम आध्यात्मिक गुरुओं और विचारकों में से एक थे, जिन्होंने न केवल भारतीय संस्कृति का विश्व भर में गौरव बढ़ाया, बल्कि युवाओं को ऊर्जा, आत्मविश्वास और चरित्र-निर्माण का एक नया मार्ग भी दिखाया। स्वामी जी का दर्शन और आदर्श भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत आज भी बना हुआ है। स्वामी विवेकानंद के सुझाए रास्ते पर चलकर ही एक भारत-श्रेष्ठ भारत, आत्म-निर्भर भारत और भारत को विश्व गुरु बनाने का सपना साकार किया जा सकता है। *

{ कविता }
अवतार सिंह अक्षरजीवी

आगाह

ऐसा नहीं है कि आकर्षण नहीं है
मेरी आंखों में किसी के लिए,
ऐसा भी नहीं है कि मैं कह दूं कि
मेरी भावनाएं मुझे शून्य मानती हैं,
बहुत प्रेम कर लेने के बाद
प्रेम करने का जी नहीं करता
मेरा मन इस तरह का उदार भी नहीं है,
फिर क्या सत्य है?
जो प्राप्त है, उसे पाने के बाद से
लगातार खोते चले जाना
भव्यता से खंडहर हो जाना
भरी-पूरी झील से कीचड़ हो जाना
सुर मिलना, अंत में एकाकी रह जाना
मुझे प्रेम के प्रति आगाह करता है-
प्रेम को पा लेना
प्रेम के समापन की लंबी यात्रा है,
प्रेम को न पाना
प्रेम करते चले जाने की निष्क्रियता है।

{ व्यंग्य }
भूपेंद्र भारतीय

तपेली में तरी ही बची

जैसे चुनावों के समय कुछ कार्यकर्ता निःस्वार्थ भाव से दल की सेवा करते हैं और चुनाव जीतने के बाद मेवा किसी और के हाथ लगता है। उसी तरह आखिर में मंगल जैसों की थाली में सिर्फ पतला तरीनुमा पानी रह जाता है।

मंगल के साथ पिछले दिनों बड़ा धोखा हो गया। धोखा क्या कहूं, मंगल की भाषा में यह एक तरह से 'सेवा का शिकार' होने जैसा है। या कहें, ये वही धोखा था, जो एक आम राजनीतिक कार्यकर्ता के साथ चुनाव के बाद जीतने वाला दल करता है। वैसे ही जैसे बड़े बाबू, चपरासी और कार्यालय के अन्य छोटे बाबुओं के साथ करते हैं, रिश्वत में आया अधिकांश माल बड़े बाबू निगल लेते हैं और अन्य के पास सिर्फ पतली तरी बचती है। सिर्फ दाल का पानी ही पानी, फिर उस तपेली में चम्मच हिलाते रहो। ऐसा ही पिछले दिनों मंगल के साथ हुआ। वह पिछले दिनों अपनी जाति के प्रतिभा सम्मान आयोजन में गया था, जिसे बड़ी होशियारी से समाजवादी ढंग में सामाजिक आयोजन कहा गया था। पहले आयोजन में सामाजिक नेताओं के द्वारा भाषणबाज प्रतिभाओं को जैसे जबरन पकड़कर सम्मानित किया गया हो। उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए जातिगत नेताओं द्वारा दो शब्द कहे गए। वे दो शब्द स्वयं की प्रशंसा में ज्यादा थे।

मंगल इस आयोजन में कार्यकर्ता की भूमिका में था। उसे किसी ने बोला नहीं था। ना ही चुनावी उम्मीदवारों की सूची जैसी किसी सूची में उसका नाम था और ना ही इसके लिए उसने कोई याचिका लगाई थी। वह भावुकता में चला गया। उसे सेवा करने का भी कुछ मन हुआ था। जैसे आजकल सब तरफ सेवा के लिए लोग जाते हैं। नेतागण देश की सेवा के लिए पागल हो रहे हैं। युवा अलग तरह से सेवा करना चाहता है। जैसे राष्ट्रीय स्तर पर इस देश का युवा 'देश सेवा' के लिए गलाकाट प्रतियोगी परीक्षा पास करता है और फिर कुछ ही वर्षों में सेवा के नाम पर भ्रष्टाचार के मामलों से देश के अखबारों में बड़ी-बड़ी हेडलाइन बनाता है। वहीं संसदीय और विधायी समितियों में जनप्रतिनिधि देश सेवा व नवाचार के नाम पर चार-पांच देशों की यात्रा करते हैं और जनप्रतिनिधि होने का कर्त्तव्य निभाते हैं। वैसे ही मंगल भी उस आयोजन में सेवा के लिए चला गया। जैसे युवा शुरू-शुरू में राजनीतिक-सामाजिक आंदोलनों में जाता है और भीड़ का शिकार हो या तो भावुकता में अपने हाथ-पैर तुड़वा लेता है या फिर पुलिस थाने के रजिस्टर में अपना नाम दर्ज कराकर राजनीति का स्थाई खिलाड़ी बन जाता है।

मंगल को भी लगा कि बड़े आयोजन में उसके हाथ कुछ तो आएगा। उसके जीवन में भी कुछ मंगल हो जाएगा। जैसे कर्मठ कार्यकर्ताओं की सेवा से मंत्रीजी जनसेवा करते हैं। उसे भी नेतृत्व की अग्रिम पंक्ति में आने का रोग चढ़ा। उसे भी लगा, समाज सेवा करने पर गाढ़ी तरी व साग दोनों का आनंद मिलेगा। वह भी अब नया कुर्ता-पायजामा पहनकर समाज सेवा की तपेली में अपनी सेवा रूपी चम्मच हिलाने गया था। उसने पढ़ा था, इस सेवा के लिए आजादी से पूर्व और उसके बाद बड़े-बड़े लोग, अपनी जमी-जमाई वकालत, व्यापार, जागीरदारी आदि छोड़कर इस सेवा में कूद पड़े थे। तो भला मंगल अपने समाज के आयोजन में टाट-पट्टी बिछाने से लेकर भोजन परोसने तक का काम क्यों नहीं कर सकता? आगे मंच और माइक भी मिलेगा। पूर्व में तो उसके जैसे कार्यकर्ताओं द्वारा समाज सेवा के लिए प्राण तक न्यौछावर कर दिए। क्या उन्होंने कम तरी-साग का आनंद उठाया? कैसे मालामाल हो गए! जैसे वे इस सेवा के लिए ही बने हों।

मंगल की मानें तो उस आयोजन में वह समाज सेवा के भाव से गया था। लेकिन उसका भाव वही था, जो अधिकांश सामाजिक संगठनों का रहता है। समाज में दबे-कुचले लोगों की सेवा के नाम पर सरकार से अनुदान की तरी-साग दोनों का आनंद उठाते हैं। मंगल सबको साग-तरी परोसता है। उसने सोचा यह सब मुझे भी मिलेगा। उसे भी दूसरे कार्यकर्ता तरी वाली साग परोसने आएंगे। जैसे मतदाता पांच साल में एक बार मतदान करने जाता है तो उसे लगता है कि देश अब उसके मत से चलेगा। लेकिन परिणाम देखकर कुछ दिनों में उसका मत बदल जाता है। और देश की राजनीति अपने मद में चलने लगती है। सत्ता के हाथी की चाल में उसकी आवाज दब जाती है। कहां तो वह दबे-कुचलों की आवाज उठाने आया था और चुनाव बाद वह स्वयं दबा-कुचला-सा हो जाता है।

धीरे-धीरे वह तरी-साग की सच्चाई जानने लगता है। कौन तरी खा रहा है और किसके हिस्से साग आता है? और अंत में बड़ी जनसंख्या को सिर्फ साग के पतले पानी से ही संतुष्ट होना पड़ता है। जैसे उस दिन मंगल ने बहुत मेहनत की थी। भाग-भाग कर सबको भोजन कराया। आयोजन को सफल बनाने में निःस्वार्थ भाव से सेवा की। जैसे चुनावों के समय कुछ कार्यकर्ता निःस्वार्थ भाव से दल की सेवा करते हैं और चुनाव जीतने के बाद मेवा किसी और के हाथ लगता है। उसी तरह आखिर में मंगल जैसों की थाली में सिर्फ पतला तरीनुमा पानी रह जाता है। *

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

काव्यात्मक गद्य में लेखिका के मनोभाव

वर्तमान हिंदी कविता परिदृश्य में नीलेश रघुवंशी एक प्रतिष्ठित नाम हैं। कविता से इतर उनके द्वारा रचित दो उपन्यासों को भी बहुत पसंद किया गया है। अब हाल में प्रकाशित होकर आई पुस्तक 'गद्य का पानी' में उनके काव्यात्मक गद्य की रवानगी देखते ही बनती है। यह किसी एक विधा की सीमाओं में बंधी किताब नहीं है। यहां कई विधाओं का ऐसा मनोरम कोलाज नजर आता है, जो हमें लेखिका के भावजगत में उतरने, उनकी रचनात्मकता को बिल्कुल करीब से महसूसने और उनकी महीन संवेदनाओं को स्पर्श करने का रास्ता मुहैया कराता है। चार खंडों में बंटी इस किताब में नीलेश अपने अतीत से लेकर वर्तमान में आवाजाही करती नजर आती हैं। 'मन की चिट्ठी' खंड में वे मन, जीवन और समाज के विभिन्न तलों में उतरकर सृजन के रहस्य तलाशती हैं तो 'गद्य का पानी' खंड में अपने कुछ प्रिय रचनाकारों के सृजन जगत से गुजरते हुए, उत्पन्न विचारों को भी संजोती चलती हैं। उनके कुछ संस्मरणों और यात्रा संस्मरणों को 'आवारगी' खंड में पढ़ सकते हैं। अंतिम खंड 'जनरल बोगी' में संकलित उनके कुछ वक्तव्य और टिप्पणियां, हमें रचनाकार की अबूझ-अनदेखी सी सृजन भूमि में झांकने का झरोखा उपलब्ध कराती हैं। कहना चाहिए कि यह पुस्तक, पाठक को कई विधाओं से तैयार किश्ती के जरिए लेखिका के काव्यात्मक गद्य के अप्रतिम प्रवाह का आनंद लेने का अवसर प्रदान करती है। *

पुस्तकः गद्य का पानी,
लेखिकाः नीलेश रघुवंशी,
मूल्यः 399 रुपए,
प्रकाशकः राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

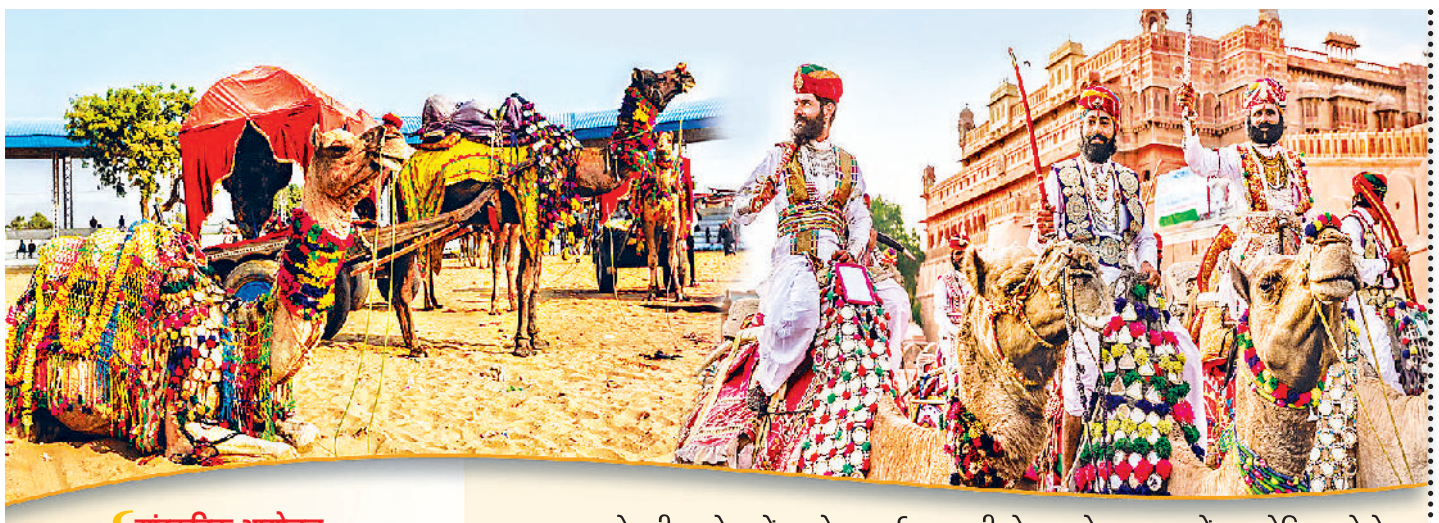

सांस्कृतिक आयोजन
धीरज बसाक

राजस्थान के बीकानेर में प्रत्येक वर्ष जनवरी के दूसरे सप्ताह में आयोजित होने वाला ऊंट महोत्सव, दुनिया भर में प्रसिद्ध है। 'रेगिस्तान का जहाज' कहे जाने वाले ऊंट के महत्व को दर्शाते और राजस्थान की लोक संस्कृति की झलक दिखाते इस महोत्सव की कुछ विशेषताओं के बारे में यहां बता रहे हैं।

लोक जीवन-संस्कृति की झलक दिखाता राजस्थान का बीकानेर ऊंट महोत्सव

बीते दो दिनों से राजस्थान के बीकानेर में चल रहे वार्षिक ऊंट महोत्सव-2026 का आज अंतिम दिन है। राजस्थान की मरुस्थलीय आत्मा, जब परंपरा-लोकजीवन और आधुनिक समय से संवाद करती है, तब बीकानेर ऊंट उत्सव जैसा अनूठा सांस्कृतिक महोत्सव जन्म लेता है। यह केवल पर्यटन आयोजन भर नहीं है बल्कि उस सभ्यता का उत्सव है, जिसने ऊंट को जीवन-सहचर बनाया है।

जीवंत संवाद रचता महोत्सवः मानव सभ्यता के विकास क्रम में शुरू से ही ऊंट बहुत महत्वपूर्ण रहे हैं। विशेष तौर पर राजस्थान के लोक जीवन की बात करें तो ऊंट, यहां के लोगों की यात्राओं, व्यापार, सुरक्षा और जीविका के हर मोड़ पर सहचर के रूप में मिलता है। ऊंटों की इसी प्रासंगिकता और उनकी सांस्कृतिक उपस्थिति को राजस्थान की विशिष्ट संस्कृति के रूप में देश और दुनिया के पर्यटकों के सामने प्रस्तुत करता है बीकानेर में हर साल आयोजित होने वाला यह ऊंट महोत्सव। यह उत्सव राजस्थान की परंपरा एवं संस्कृति को मंच देता है और वर्तमान से उसका जीवंत संवाद रचता है।

वर्तमान-अतीत की झलकः राजस्थान के थार इलाके में सदियों से ऊंट, जीवनरेखा का महत्वपूर्ण अंग रहा है। यात्रा, व्यापार, कृषि और रक्षा, हर क्षेत्र में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है। बीकानेर रियासत के दौर में ऊंटों की नस्ल सुधार, उनकी साज-सज्जा और प्रशिक्षण की एक विलक्षण परंपरा विकसित हुई, जिसने आगे चलकर ऊंट उत्सव की आधुनिक प्रस्तुति की रूपरेखा तय किया। यह उत्सव न सिर्फ लोकस्मृति और लोकसंस्कृति को मंच देता है बल्कि नई पीढ़ी को भी अपनी परंपरा से जोड़कर रखता है। उत्सव के दौरान सजे-धजे ऊंटों की भव्य परेड, ऊंट नृत्य, ऊंटों की सौंदर्य प्रतियोगिता और कौशल प्रदर्शन जैसी गतिविधियां मिलकर रेगिस्तान की सौंदर्य भाषा को अनंत विस्तार देते हैं। लोकसंगीत, कालबेलिया और घूमर की थाप पर जब ऊंट लयबद्ध ढंग से चलते हैं, तो लगता है समय ठहर गया है और दर्शक इतिहास के साथ वर्तमान को एक फ्रेम में देख रहे हैं।

हर गतिविधि करती है आकृष्टः भव्य ऊंट शोभा परेड, ऊंट नृत्य, ऊंट करतब, ऊंट सौंदर्य प्रतियोगिता, ऊंट दौड़ और कौशल प्रदर्शन, लोकसंगीत, कालबेलिया और घूमर जैसे लोकनृत्य, शिल्प, खान-पान मेला और दीप प्रज्वलन की सांस्कृतिक संध्या, इस उत्सव के मुख्य आकर्षण होते हैं। ऊंट परेड में जहां सजे-धजे ऊंटों की भव्य रंग-बिरंगी कदमताल देखने को मिलती है, वहीं ऊंट नृत्य कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षित ऊंट, लोक धुनों पर लयबद्ध होकर थिरकते हैं। अपनी तरह के अनोखे आयोजन ऊंट सौंदर्य प्रतियोगिता के तहत ऊंटों की कद-काठी, साज-सज्जा और चाल-ढाल के आधार पर किसी एक सर्वश्रेष्ठ ऊंट को विजेता चुना जाता है। ऊंट दौड़ के कौशल प्रदर्शन में मरुस्थलीय मैदानों में गति और नियंत्रण का प्रदर्शन करते हुए ऊंट दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। ढोलक, खड़ताल और अलगोजा की धुनों पर नृत्य करतीं राजस्थानी महिला नृत्यांगनाएं, कालबेलिया और घूमर जैसे लोक नृत्यों पर राजस्थानी लोक-संस्कृति का उत्सव प्रस्तुत करती हैं। इस महोत्सव में ऊंट के ऊनी उत्पाद, कशीदाकारी, मिट्टी के शिल्प जैसे प्रसिद्ध राजस्थानी शिल्प का उत्सव भी सजता है। खान-पान की बात करें, तो इस उत्सव में बीकानेरी भुजिया, रसगुल्ला तथा घेवर जैसे पारंपरिक व्यंजनों का पर्यटक बड़े चाव से स्वाद लेते हैं।

कई रूपों में है महत्वपूर्णः बीकानेर ऊंट उत्सव, राजस्थान और देश के सांस्कृतिक उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इससे देश की भव्य विरासत का संरक्षण भी संभव होता है। इससे ऊंट पालन, पारंपरिक साज-सज्जा और लोककला का दस्तावेजीकरण व मंचन होता है। इससे विलुप्त होती परंपराओं को नया जीवन मिलता है। देश-विदेश से आने वाले पर्यटक राजस्थान की लिविंग कल्चर देखते हैं, जिससे भारत की सॉफ्ट पावर को बल मिलता है। इस महोत्सव में युवाओं की भागीदारी, उन्हें आधुनिकता और परंपरा से परिचय कराता है। इन सब वजहों से ऊंट उत्सव एक अनूठा उत्सव बन जाता है।

ऊंट उत्सव के प्रमुख आकर्षणः अगर आप इस उत्सव में शामिल होने जा रहे हैं तो सुबह की परेड और शाम को होने वाले सांस्कृतिक आयोजन में हिस्सा लेने से न चूकें। इस उत्सव में आपको स्थानीयता का भरपूर रस मिलेगा, जो इस उत्सव की विशेष खूबी है। उत्सव में लोक संस्कृति, खान-पान और हस्तशिल्प का सौंदर्य देखने को तो मिलता ही है। इस उत्सव में अगर शामिल होने के लिए आप आ रहे हैं तो आस-पास के अन्य ऐतिहासिक दर्शनीय स्थलों की यात्रा करने का अवसर भी मिल जाता है। कुल मिलाकर बीकानेर का ऊंट उत्सव एक ऐसा उत्सव है, जिससे रंगीले राजस्थान की धज बनती है। *

तन-मन में करे ऊर्जा का संचार सांस्कृतिक पर्व मकर संक्रांति

मकर संक्रांति पर्व की धार्मिक, सांस्कृतिक महत्ता तो है ही, इसके स्वास्थ्य संबंधी कई पहलू भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। यहां जानिए, इस पर्व से जुड़ी उन परंपराओं के बारे में, जो शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य को बेहतरी प्रदान करते हैं।

पर्व-महात्म्य / डॉ. मोनिका शर्मा

मकर संक्रांति केवल एक धार्मिक, सांस्कृतिक या पारंपरिक त्योहार भर नहीं है। यह सामाजिक समरसता, मेल-जोल और मदद के उन मानवीय भावों से जुड़ा उत्सव है, जिनकी आज के बिखरते भरोसे के परिवेश में बहुत अधिक दरकार है। अहम बात यह भी है कि यह उत्सव सेहत बनाने और संवारने का पाठ भी पढ़ाता है। बीते कुछ बरसों में रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी होने की महत्ता को हमने अच्छे से समझ लिया है। परंपरागत खान-पान और संतुलित जीवनशैली का महत्व भी अब और गहराई से समझ आया है। ऐसे में मकर संक्रांति जैसे पर्व से जुड़ी हमारी मान्यताएं और क्रिया-कलाप स्वास्थ्य सहेजने वाली हैं।

सधी दिनचर्या की अहमियतः यह त्योहार ना केवल हमारे रहन-सहन, खान-पान और दिनचर्या में बदलाव लेकर आता है बल्कि सेहत के लिए भी कई संदेश लिए है। गुनगुनी धूप वाले इस मौसम में हमारी दिनचर्या ही बदल जाती है। यह पर्व, प्रकृति के जरिए स्वास्थ्य को सहेजने की सीख देता है। मकर संक्रांति पर सूर्य के उत्तर दिशा में जाने से दिन बड़े होने लगते हैं और इसी के साथ वसंत ऋतु का भी आगमन होता है। मकर संक्रांति से प्रकृति भी करवट बदलती है। जो सर्दियों के बाद ऊर्जा से भरी दिनचर्या की ओर लौटने का समय होता है। ऊर्जा और उजास का यह पर्व, प्रकृति के बदलाव संग सामंजस्य बनाए हुए अनुशासित जीवन जीने की सीख देता है। आज वैज्ञानिक अध्ययन और चिकित्सकों की सलाह भी मन और तन दोनों को सहेजने के लिए सधी दिनचर्या को सबसे जरूरी बताते हैं।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए जरूरी धूपः इस पर्व पर पतंग उड़ाने की परंपरा है। यह केवल मनोरंजन भर नहीं है। पतंग उड़ाने की यह रीत सेहत से भी जुड़ी है। मौजूदा जीवनशैली में कई व्याधियां तो केवल धूप की कमी के कारण ही जड़ें जमा रही हैं। ऐसे में खुले आसमान तले छत पर पतंग उड़ाना और सूर्य की किरणों का सीधे हमारे शरीर के संपर्क में आना भी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है। अब तो वैज्ञानिक भी इस बात की पुष्टि कर चुके हैं कि धूप में बैठने से शरीर को विटामिन-डी मिलता है। कई तरह के कीटाणु खत्म होते हैं और मन भी अवसाद से दूर रहता है। नींद अच्छी आती है। ब्लड सर्कुलेशन अच्छा होता है। जिससे शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। यह प्राकृतिक उजास समग्र जीवन को संवारती है। मनोभावों में संतुलन लाती है। अवसाद और थकान को दूर कर ऊर्जावान जीवनचर्या से जोड़ती है।

बेहतर होती है मानसिक सेहतः सर्दियों का मौसम एक ठहराव लाता है, जिसमें मन अनमना सा रहता है। संक्रांति पर्व से मौसम का बदलाव और खिली धूप की रंगत मन को सुकून देती है। यही वजह है कि यह पर्व मन की सेहत को बेहतर बनाने वाला भी है। यह प्रकृति का आभार जताने का पर्व भी है। साथ ही सूर्य की उपासना का यह पर्व, यह भी सिखाता है कि हम देना सीखें। क्योंकि सूर्य अपना प्रकाश, ऊर्जा और रोशनी की सौगात पूरे संसार को बिना किसी भेदभाव के बांटता है। माना जाता है कि सूर्य का उत्तर दिशा में होना भी आध्यात्मिक रूप से काफी महत्व रखता है। उत्तरायण में सूर्य के होने से व्यक्ति में नई ऊर्जा का संचार होता है। इस समय खिली धूप से मन को सकारात्मकता की उजास मिलती है। सूरज की किरणें पड़ने पर अच्छा महसूस कराने वाले हार्मोन, सेरेटॉनिन और एंडोर्फिन का स्राव बढ़ता है, जिससे हमारे मन को खुशनुमा अहसास की सौगात मिलती है।

त्योहारी आहार से बढ़े इम्यूनिटीः देश भर में लोग मकर संक्रांति के त्योहार पर तिल, मूंगफली, गुड़, चावल और उड़द की दाल जैसे आहार का सेवन करते हैं। इन सभी चीजों में सबसे ज्यादा महत्व तिल को दिया जाता है, जो शरीर को निरोग रखता है। मकर संक्रांति के पर्व पर जिन चीजों को खाने में शामिल किया जाता है, वे पौष्टिक होने के साथ ही साथ शरीर को ऊर्जा देने वाले भी होते हैं। इस पर्व पर खाई जाने वाली लगभग सभी चीजें रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली हैं। समझना मुश्किल नहीं कि सांस्कृतिक विरासत ही नहीं सेहतमंद रहने के मोर्चे पर भी यह त्योहार बहुत महत्वपूर्ण है। आध्यात्मिक ही नहीं वैज्ञानिक आधार भी लिए है। समझना जरूरी है कि बिखरते मन-जीवन के इस दौर में तो सामाजिक और वैज्ञानिक चेतना जगाने वाले ऐसे पर्वों की सार्थकता और बढ़ गई है। *

सजेशन
नरेंद्र कुमार

डिजिटल टेक्नोलॉजी में माहिर होना, आज कामयाबी की सबसे जरूरी मेरिट बन गई है। आज हर जगह जिस योग्यता की सबसे ज्यादा डिमांड है, वह डिजिटल टेक्नोलॉजी ही है। इस बारे में आपको पता होना चाहिए।

प्रोफेशनल सक्सेस के लिए जरूरी है डिजिटल स्मार्टनेस

आज के दौर में प्रोफेशनल सक्सेस सिर्फ डिग्री, अनुभव या पुराने सर्टिफिकेट पर निर्भर नहीं करती है। वास्तव में प्रोफेशनल सक्सेस की परिभाषा अब बिल्कुल बदल चुकी है। कंपनियों से लेकर स्टार्टअप तक हर जगह अब जिस एक चीज की योग्यता सबसे ज्यादा समझी जाती है, वह है डिजिटल स्मार्टनेस। इसलिए डिजिटल टेक्नोलॉजी में एक्सपर्ट होना जरूरी है।

आज के दौर की जरूरतः पिछले एक दशक से प्रोफेशनल वर्ल्ड में जितना तेज बदलाव हुआ है, पिछले 50 सालों में उतना बदलाव किसी क्षेत्र में नहीं हुआ। एआई आटोमेशन, रिमोट वर्क, एप इकोनॉमी ने लगभग हर सेक्टर की कार्यशैली को एक नई दिशा दी है। दरअसल, अब लगभग सभी सेक्टर्स में पेपर वर्क बहुत कम होता है। अधिकांश काम डिजिटल स्क्रीन पर ही होते हैं, इसलिए हर सेक्टर का वर्किंग सेंटर डाटा बन चुका है। मीटिंग्स अब ऑफिस में आमन-सामने बैठकर कम, ऑनलाइन ज्यादा होती हैं। इसलिए टेक एक्सपर्ट एंप्लॉइज ही कंपनी की पहली पसंद बन गए हैं। ऐसे में अगर अपने करियर में निरंतर आगे बढ़ना है तो डिजिटल स्किल में दक्षता हासिल करिए, यही एकमात्र आगे बढ़ने का जरिया है। आपके पास एकेडमिक कोई भी डिग्री हो, अगर आपमें डिजिटल स्किल नहीं है तो याद रखिए कि आसानी से नौकरी नहीं मिलने वाली। अगर मिल भी गई तो आप अपने करियर में बहुत आगे तक ग्रो नहीं कर पाएंगे।

हर सेक्टर के लिए है जरूरीः प्रोफेशनल करियर कोई भी हो, लेकिन आज हर सेक्टर के लिए डिजिटल टेक्नोलॉजी जरूरी हो चुकी है। फिर चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, स्वास्थ्य का क्षेत्र हो, कृषि क्षेत्र हो, बैंकिंग हो, पत्रकारिता हो, कानून हो, बिजनेस या इंजीनियरिंग हो, हर क्षेत्र डिजिटल टेक्नोलॉजी से ही संचालित होता है। इसलिए आज किसी भी करियर के लिए ये क्षमताएं जरूरी हैं। जानकारी खोजने की डिजिटल क्षमता, ई-मेल हैंडलिंग, ऑनलाइन कम्युनिकेशन, सोशल मीडिया मैनेजमेंट, एआई टूल्स का उपयोग, एक्सेल पावर, वीआई जैसे डाटा टूल्स, टीम वर्क के लिए जूम, स्लैक, टीम्स जैसे प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल, सोशल मीडिया और डिजिटल ब्रांडिंग जैसी स्किल्स जो व्यक्ति अपने करियर में नहीं अपनाता या अपनाने की क्षमता नहीं रखता, तो समझिए वो मॉडर्न जॉब मार्केट से आउटडेटेड हो जाएगा।

एआई को बनाएं अपना कुलीगः बीते कुछ वर्षों में एआई, हर प्रोफेशनल सेक्टर में हमारा कुलीग बनने के दौर में प्रवेश कर चुका है। एआई अब सिर्फ मशीन टूल नहीं, कई कामों में मददगार बन चुका है। एआई अब प्रोफेशनली आगे बढ़ने में बहुत हेल्पफुल हो सकता है। यह ऐसे तरीकों से आपकी मदद कर सकता है, जिसके बारे में पहले कभी सोचा भी नहीं गया था। प्रेजेंटेशंस को तैयार करना, प्रोजेक्ट की प्लानिंग करना, कोड-ऑटोमेशन, इंटरव्यू की तैयारी और नए स्किल्स सीखने में यह बहुत हेल्पफुल साबित हो रहा है। आज एआई के उपयोग करने वाले प्रोफेशनल रूटीन वर्क को दूसरे लोगों के मुकाबले 40 से 50 फीसदी कम समय में कर लेते हैं। जाहिर है, दूसरों से ज्यादा प्रोफेशनल ग्रोथ कर पाते हैं। इसलिए अपने करियर में मनचाही कामयाबी चाहते हैं, लेकिन अभी तक डिजिटल टेक्नोलॉजी में दक्ष नहीं हैं तो बिना देर किए सबसे पहले इसमें दक्षता हासिल कर लें।

हर सेक्टर के लिए अलग डिजिटल टूलः आज कंपनियां अपने लिए एंप्लॉइज रिक्रूट करते समय यह नहीं पूछतीं कि आप कंप्यूटर जानते हैं या नहीं बल्कि पूछते हैं, आप कौन-सा डिजिटल टूल कितनी दक्षता से इस्तेमाल कर सकते हैं? क्योंकि आज कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिसके लिए कोई विशेष डिजिटल स्किल न मौजूद हो। जरा इन कुछ डिजिटल तकनीकों पर नजर दौड़ाइए और फिर सोचिए इनमें से किस टूल में दक्ष होना आपके प्रोफेशनल ग्रोथ के लिए जरूरी है। जैसे-डाटा एनालिटिक्स, साइबर सिक्यूरिटी बेसिक्स, सोशल मीडिया मैनेजमेंट, ऑटोमेशन टूल्स, एक्सेल एडवांस, ग्राफिक-वीडियो टूल, सीआरएम/ईआरपी सॉफ्टवेयर, एआई सपोर्ट, वर्क फ्लो आदि। इन सारे के सारे टूल्स को ऑपरेट करना अब प्रोफेशनल मेरिट लिस्ट का आधार बन चुका है और करीब-करीब हर क्षेत्र की जॉब का हिस्सा बन चुका है।

पावरफुल है डिजिटल नेटवर्किंगः अब नॉर्मल रेज्यूमे से कहीं ज्यादा लिंक्डइन जैसे प्लेटफॉर्म शक्तिशाली साबित हो रहे हैं। यहां की आपकी तस्वीर, प्रोफाइल, पोस्ट, कमेंट, बातचीत, सब आपकी डिजिटल पहचान बनाते हैं। डिजिटल नेटवर्किंग के बहुत फायदे हैं। इससे अच्छे प्रोफेशनल अवसरों तक सीधे पहुंच बनती है। इंडस्ट्री लीडर से सीधा संवाद होता है। कई तरह की नौकरियों का पता चलता है। किसी खास प्रोजेक्ट और फ्रीलांस काम करने का भी अवसर मिलता है। इसके जरिए हर प्रोफेशनल अपने आप में सेल्फ ब्रांड बन सकता है, यह कंसेप्ट भी डिजिटल मीडिया से ही आया है। आज 50 प्रतिशत से ज्यादा कॉर्पोरेट जॉब्स डिजिटल रेफरल या नेटवर्क से मिल रही हैं और यह आंकड़ा यहां रुका नहीं है, लगातार ऊपर की ओर बढ़ रहा है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि क्यों डिजिटल टेक्नोलॉजी में दक्षता आज की सबसे बड़ी जरूरत बन गई है।

ई-लर्निंग के खुले रास्तेः आज सफल करियर का मंत्र है, 'जो सीखना बंद कर देता है, वह आगे बढ़ना भी बंद कर देता है।' डिजिटल टेक्नोलॉजी की सबसे बड़ी देन है, ऑनलाइन सीखने की असीमित आजादी। कोरसेरा, उडेमी, एनबीटीएल, गूगल सर्टिफिकेट्स, यू-ट्यूब पर उपलब्ध कोर्सेस, आज ऐसे अनेक प्लेटफॉर्म है, जहां जबर्दस्त असीमित ज्ञान है। लेकिन अगर आप डिजिटल टेक्नोलॉजी से अंजान हैं, तो यह सारा ज्ञान आप नहीं पा सकते हैं। इसलिए आपका रेग्युलर डिजिटल नॉलेज से खुद को अपडेट करते रहना जरूरी है। *

सिने ट्रेंड
हेमंत पाल

हिंदी फिल्म निर्माण के आरंभिक दौर से ही साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्में बनती रही हैं। हालांकि इन फिल्मों की सफलता का प्रतिशत कम ही रहा है। इसकी प्रमुख वजहों के साथ यहां कुछ ऐसी फिल्मों पर भी नजर डाल रहे हैं, जो साहित्यिक कृतियों पर आधारित रहीं।

साहित्यिक कृतियों पर बनी फिल्में कम हुईं सफल-अधिकांश रहीं असफल

किसी भी साहित्यिक कृति पर आधारित फिल्म बनाने के लिए फिल्म के निर्माता-निर्देशक और स्क्रिप्ट राइटर का उस साहित्यिक कृति के मूल भाव को समझना पहली शर्त होती है। कथाकार की भावना को समझना, उसमें मनोरंजन का पक्ष ढूंढ़ना और सबसे बड़ी बात, यह पता लगाना कि जब यह पर्दे पर आएगी तो इसे दर्शक स्वीकारेंगे या नहीं, इन बातों को जानना-समझना बहुत जरूरी है।

शुरुआत से बन रहीं साहित्यिक फिल्मेंः साहित्य और सिनेमा दोनों ही अलग विधाएं हैं। लेकिन फिल्म निर्माण के आरंभिक दौर से ही साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्में बनती रही हैं। हां, इस तरह की साहित्य-आधारित फिल्में संख्या की दृष्टि से कम जरूर बनी हैं। हिंदी की पहली फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' भी भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक 'राजा हरिश्चंद्र' पर आधारित थी। बाद में प्रेमचंद की कई कालजयी कृतियों पर फिल्में बनाई गईं। कुछ फिल्में चलीं, तो कुछ को दर्शकों ने नकार दिया। साहित्यिक कृतियों पर फिल्में बनाने के अब तक कई प्रयोग हुए, पर ज्यादातर को सफलता नहीं मिली! जितना किसी साहित्यिक कृति को पसंद किया गया, उस पर बनी फिल्में उतनी सफल नहीं रहीं।

'रेणु' की कहानी पर बनी 'तीसरी कसम'

साहित्यिक कृति पर आधारित यादगार फिल्मेंः बॉलीवुड में साहित्यिक रचनाओं पर आधारित कुछ फिल्मों की बात करें तो प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' पर इसी नाम से बनी फिल्म, फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी पर बनी 'तीसरी कसम', महाश्वेता देवी की कहानी पर बनी 'रुदाली', विमल मित्र के उपन्यास पर बनी 'साहब, बीवी और गुलाम', रवींद्र नाथ टैगोर की कहानी 'नष्टनीड़' पर सत्यजीत रे की फिल्म 'चारुलता', ये कुछ यादगार फिल्में हैं। भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास 'चित्रलेखा' पर केदार शर्मा ने फिल्म बनाई, जो सफल भी रही। कमलेश्वर की कृतियों पर आधारित गुलजार द्वारा बनाई गई फिल्में 'आंधी' और 'मौसम' की गिनती भी साहित्य पर आधारित बेहतरीन फिल्मों में होती है। बांग्ला फिल्मकार बासु चटर्जी ने राजेंद्र यादव के उपन्यास पर आधारित 'सारा आकाश' और मन्नू भंडारी की कहानी 'यही सच है' पर आधारित 'रजनीगंधा' जैसी प्रशंसनीय फिल्में बनाई। शरतचंद्र के उपन्यासों पर भी फिल्में बनीं, जिनमें 'देवदास' भी शामिल है।

नहीं चलीं साहित्य पर आधारित ये फिल्मेंः साहित्य पर आधारित कई ऐसी फिल्में बनीं, जिसे आशानुकूल सफलता नहीं मिली। चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' पर भी फिल्म बनी। आचार्य चतुरसेन शास्त्री के उपन्यास 'धर्मपुत्र' पर बीर.आर. चोपड़ा ने फिल्म बनाई। कहानीकार राजेंद्र सिंह बेदी की कृति 'एक चादर मैली सी' पर भी फिल्म बनी, पर वह भी अपेक्षा के अनुसार नहीं चली। इन फिल्मों के असफल होने का एक कारण संभवतः यह भी था कि फिल्मकार और कलाकार लेखक के मर्म को पकड़कर उसे पर्दे पर ठीक से उतार नहीं पाए! हाल के वर्षों में कथाकार काशीनाथ सिंह की मशहूर कृति 'काशी का अस्सी' पर चंद्र प्रकाश द्विवेदी ने फिल्म 'मोहल्ला अस्सी' बनाई, पर यह फिल्म भी दर्शकों की कसौटी पर खरी नहीं उतरी। अपने संवादों को लेकर फिल्म विवादों में फंसी सो अलग।

मन्नू भंडारी की कहानी पर बेस्ड 'रजनीगंधा'

साहित्य और सिनेमा में होता है अंतरः साहित्य किसी दृश्य या घटना की जो व्याख्या या विश्लेषण करता है, हर पाठक के पास वही पहुंचता है। पाठकों के स्तर में अंतर के आधार पर उसका प्रभाव भी अलग-अलग होता है। जबकि सिनेमा, दृश्य माध्यम होता हैं। उसके पास व्याख्या और विश्लेषण की सुविधा बहुत कम होती है। साहित्य में जो व्याख्या उसके प्रभाव को बढ़ा देती है, उसी व्याख्या की कोशिश सिनेमा के असर को कमजोर कर देती है। जो विवरण साहित्य की ताकत होता है, वही सिनेमा की कमजोरी बनकर सामने आता है। साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि पाठक इसे पढ़ते हुए अपनी कल्पनाशक्ति से दृश्यचित्र बनाता है। जबकि सिनेमा में दर्शक को डायरेक्टर की कल्पनाशक्ति देखनी पड़ती है।

प्रभाव छोड़ने में असफल रही 'मोहल्ला अस्सी'

कमलेश्वर के उपन्यास पर आधारित फिल्म 'आंधी'

होती हैं व्यावसायिक बाध्यताएंः हर फिल्म के पीछे व्यावसायिक दबाव भी काम करता है। ये दबाव भी होता है कि मनोरंजन के बीच साहित्यकार की सोच, उसकी कृति के साथ भी पूरा इंसाफ हो। साहित्यकार अपनी कल्पना शक्ति से पाठकों को जिस कहानी से रूबरू करवाता है, फिल्मकार उसे उतनी ईमानदारी से पर्दे पर उतार भी पाता है या नहीं, ये भी ध्यान रखने वाली बात है। एक ही कहानी को अलग-अलग पाठक अपने मानस में अलग प्रभाव के साथ लेते हैं। जबकि फिल्मकार को उसे हर दर्शक के नजरिए से सजाना पड़ता है। इन्हीं कारणों से अधिकांश मशहूर साहित्यिक कृतियों के फिल्मी प्रयोग खास सफल नहीं हो पाए। इसे हिंदी फिल्मों का दुर्भाग्य ही माना जाना चाहिए कि फिल्मकारों और फिल्म से जुड़े अधिकांश लोगों का साहित्य से कोई सरोकार नहीं रहा, जबकि अन्य क्षेत्रीय और विदेशी भाषाओं में बनी कई फिल्में, साहित्यिक कृतियों से जुड़ी रहीं। हम उम्मीद कर सकते हैं आने वाले समय में शायद फिल्मकारों की नजर अच्छी कहानियों पर पड़े, वे उन्हें पर्दे पर सफलतापूर्वक उतार सकें और इस तरह की फिल्में सफल भी हों। *